٧٨٦

माँ बाप और औलाद के हुक़ूक़

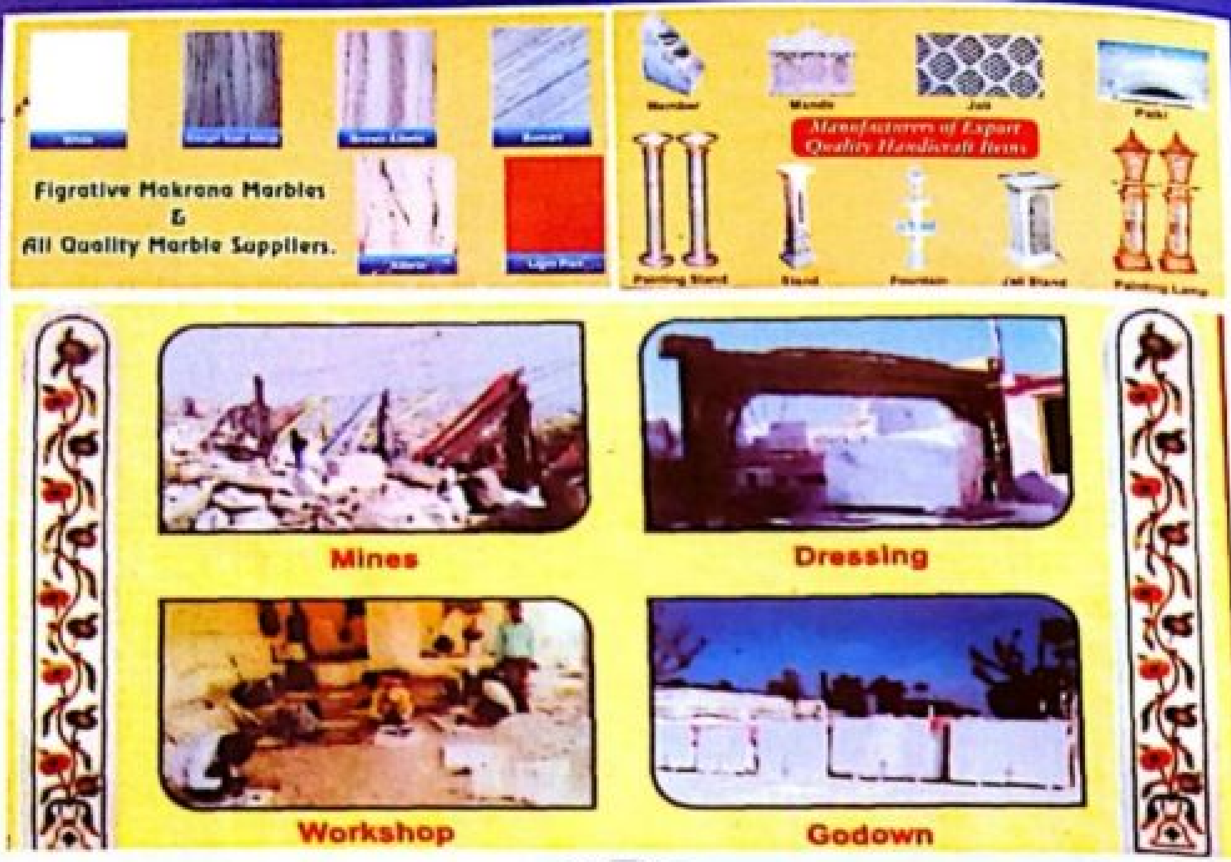
-: लेखक :-

मुफ्ती मोहम्मद शाहिद अली मिस्बाही

प्रधानाध्यापक

(जामिया फ़ैज़ाने अशफ़ाक़ नागौर शरीफ़ राज.)

-: नाशिर :-



9252041604
9829370989

GAUR GROUP OF HAJI JAN MOHD.
HOTAL NEEL GAAN (P) LTD.

01588-242291 (O)
242268 (R)
243979 (R)

Mohd. Fayaz Gour

Mines Owner

M/s. Imtiyaz Irshad & Bros.

M/s. Praveen Gour & Sons

M/s Iqbal Rubina Marble Supp

: Manufacturer of :

Etnic Stone Carving, Stone Jali (Girills) Marble
Albeta Slabs, Marble Snowhite, Marble Adanga

Specialist : Snow White, Super Albeta

Off. :
Near Home Signal,
Behind Choudhary Foundary
Gunawati Road, Makrana-341505

Resi.
Gorabass, Pipli Chourha,
Near Maheshwari Bhawan,
Makrana-341505 (Raj.)

2nd Office: Jhalra Talab, Near Mayur Marble, Jhalra Chok, MAKRANA

٧٨٦
٩٢

माँ बाप और औलाद के हुकूक

-:लेखक:-

मुफ्ती मोहम्मद शाहिद अली मिस्बाही

प्रधाना अध्यापक

(जामिया फैज़ाने अशफाक़ नागौर शरीफ राज.)

हिन्दी कर्ता :-

नासिर हुसैन-मोहम्मद नदीम

विद्यार्थी

(जामिया फैज़ाने अशफाक़ नागौर शरीफ राज.)

नाशिर :-

इमाम अहमद रज़ा लाईब्रेरी

(जामिया फैज़ाने अशफाक़, नागौर शरीफ-राज.)

इन्तिसाब

मोहम्मद सानी उर्फ चान्द बाबू के नाम, और इस्लाम के उन सभी फरजन्दों के नाम जो अपनें माँ-बाप की खिदमत को निजाद का जरिआ समझते हैं।

मो. शाहिद अली मिस्बाही

मज़ामीन की फहरिस्त

पहली नज़र इधर

इन्सानों पर अल्लाह तआला की जानिब से दो क़िस्म के हुकूक़ लाज़िम हैं (1) अल्लाह के हुकूक़ (2) बन्दों के हुकूक़। इन हुकूक़ से छुटकारा बेगैर अदाईगी या तौबा मुमकिन नहीं लेकिन आज कल इन हुकूक़ और इनके अहकाम से अवाम तो अवाम है ख्वास भी या तो ना वाकिफ हैं या फिर अदाईगी के सिलसिला में कोताही के शिकार हैं जिसका जी चाहे वह सरवे करके देख ले चन्द लोगों को छोड़कर बाकि़ सभी लोग हुकूक़ की अदाईगी में कोताही के मुजरिम नज़र आऐंगे मोला तआला रहम फरमाऐ।

फकीर ने अब से चन्द साल पहले हुकुकूल ईबाद नाम की एक उर्दू किताब तसनीफ की थी जिसमें हर क़िस्म के हुकूक़ ज़िक्र किऐ गये थे और उसे अवामो ख्वास ने पसन्द भी किया था। मग़र राजस्थान में चूंकि उर्दू पढ़ने वालों की ताअदाद बहुत कम है इसलिए हुकुकूल ईबाद नामी उर्दू किताब से यहां के मुस्लमानो को खास फाईदा ना हुआ उधर बहुत सारे अहबाब ने हुकुकूल इबाद को हिन्दी में मुन्तकि़ल करने का तक़ाज़ा किया। मगर में अपनी ज़हनी परेशानियों की वजह से इस तरफ तवज्जोह नहीं दे सका अब रमज़ानुल मुबारक में थोडा सा फुरसत का वक़्त मिला और हमारे बाज़ तलबा भी साथ देने को तैयार हो गये इसलिए मैने हुकुकूल इबाद नामी किताब को चन्द छोटे छोटे रिसालों की सूरत में हिन्दी में मुन्तकि़ल करने का सिलसिला शुरू कर दिया ताके हमारे इस्लामी भाई आसानी के साथ किताब को कम क़ीमत में खरीद सकें और पूरी किताब को पढ़कर पूरा फाईदा हासिल कर सकें और चूंकि मौजूदा दौर में हमारे इस्लामी मुआशरा में आम तोर से माँ बाप के हुकुक़ से बेतवज्जही की जाती है और बच्चों की इस्लामी तरबीयत से बड़ी गफलत बरती जाती है इसलिए मैंने सबसे पहले माँ बाप और बच्चों के हुकुक़ के नाम से ये रिसाला अपने इस्लामी भाईयों की खिदमत में पेश करने की सआदत हासिल की। दुआ है की अल्लाह तआला हमारे इस्लामी भाईयों को इस किताब से पुरा फाईदा उठाने की तौफीक़ अता फरमाए आमीन।

मोहम्मद शाहिद अली मिस्बाही

माँ बाप के हुकूक़

अल्लाह ताअला की जानिब से बन्दों पर दो क़िस्म के हुकूक़ लाज़िम हैं। (1) अल्लाह के हुकूक़ (2) हुकूकुल ईबाद, इन में अल्लाह के हुकूक़ की अहमियत तो अपनी जगह, हुकूकुल इबाद का हाल ये है के बगेर अदायगी उन से छुटकारे की कोई सुरत नहीं अदायगी बहर हाल ज़रूरी है आज नहीं तो कल सही! मगर आज कल उमूमन हुकूकूल इबाद की अदायगी में और खुसुसन माँ बाप के हुकूक़ की अदायगी मे अवाम व खवास जिस क़दर गफलत बरत रहे हैं और बे तवज्जही के शिकार हैं वो किसी से पोशीदा नही जिस का जी चाहे वो खवास और तक़वा की राग अलापने वालों का सरवे करके देख ले चन्द लोगों को छोड़कर हर शख्स माँ बाप के हुकूक़ की अदायगी में कोताही का मुजरिम नज़र आऐगा। हालांके हुकूकुल इबाद में माँ बाप की बड़ी अहमियत है कुरआन मजीद मे उमुमन अल्लाह के हक़ के साथ माँ बाप के हुकूक़ का ज़िक्र है जिस से माँ बाप की इताअत व फरमा बरदारी और उन के साथ हुस्ने सलूक की ताकीद वाज़ेह है! हम यहाँ उन आयात को सुप्रदे क़लम करते हैं जिन मे अल्लाह ताअला ने माँ बाप के हुकूक़ का जिक्र फरमा कर उनकी इताअत को लाज़िम कर दिया है।

माँ बाप के हुकूक़ कुरआन की रोशनी मे

- अल्लाह ताअला इरशाद फरमाता है। माँ बाप के साथ नेक सुलूक करो अगर तुम्हारे पास उन मे से कोई एक या दोनों बुढ़हापे को पहुँचे तो उन्हे उफ तक ना कहो ना ही उन्हे झिड़क कर जवाब दो बलके उनसे ऐहतराम के साथ बात करो और नरमी व रहम के साथ उनके सामने झुक कर रहो और दुआ किया करो परवर दीगार इन पर रहम कर के इन्होने मुझे बचपने मे पाला था। (बनी इसराईल)

- अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करो और माँ बाप के साथ हुस्ने सलुक करो। (सुरेह बक़रा)
- हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सलुक का हुक्म दिया। (सुरेह अनकबुत)
- और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक ना बनाओ और माँ बाप के साथ हुस्ने सलुक करो। (सुरेह निसा)
- ऐ नबी फरमा दीजीए आओ में तुम्हें पढ़कर सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने हराम किया ये के उसका कोई शरीक ना करो और माँ बाप के साथ भलाई करो (सुरेह अनआम)
- तुम फरमाओ जो कुछ माल नेकी में खर्च करो तो वोह माँ बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों के लिये (सुरेह बक़रा)

इन आयात में वाज़ेह तोर पे माँ बाप के साथ हुस्ने सुलुक का हुक्म है और उनके अदब व ऐहतराम इताअत व फरमा बरदारी और अक़ीदत व मोहब्बत की तरगीब के साथ किसी भी क़िस्म की तकलीफ पहुँचाने और दिल आज़ारी करने की मुमानअत भी ! और चुंकि अल्लाह ताअला के हक़ के बाद फोरन ही माँ बाप के साथ अहसान का ज़िक्र है इस लिऐ माँ बाप के हुकूक़ की अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है और ये साबित होता है के हुकूकूल इबाद मे सबसे बड़ा हक़ माँ बाप का है जिसे बहरहाल अदा करना ज़रूरी है इसी अहमियत के पेशे नज़र हुजुर अक़दस सललल्लाहो अलहे वसल्लम ने भी माँ बाप के साथ हुस्ने सलुक की सख्त ताकीद फरमाई है। हम यहां चन्द हदीसें जिक्र करते हैं उन्हें पढ़िये और अम्ल की कोशिश किजिये।

माँ बाप के हुकूक़ हदीसों की रोशनी मेः-

- हज़रत अबु सईद खुदरी रदीअल्लाहो अनहो से रिवायत है । अहले यमन का एक शख्स हीजरत करके (बगरज़े जीहाद) हुजुर सललल्लाहो अलहे वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ हुजुर ने उससे दरयाफ्त फरमाया क्या यमन में तुम्हारा कोई है, उसने अरज़ की मेरे माँ बाप है, हुजुर ने दरयाफ्त फरमाया क्या उन्होंने तुम्हें इजाज़त दी है। कहा नहीं ! फरमाया तो उनके पास लोट जा अगर वोह इजाज़त दें तो जीहाद करो वरना उनके साथ हुस्ने सलुक करो (अबु दाऊद शरीफ सफा नं. 342)
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिय-ल्लाहू अनहू बयान करते है कि मैने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु आलयहि वसल्लम से पूछा अल्लाह तआला के नज़दीक कौन सा अमल ज़्यादा महबूब है । फरमाया वक़्त पर नमाज़ पड़ना, मैनें अर्ज़ कि फिर कौन सा अमल ? फरमाया माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करना मैनें अर्ज़ कि फिर? फरमाया अल्लाह कि राह में जीहाद करना(बुखारी शरीफ जिल्दे एक सफा नं. 79)
- हज़रत अबु हुरेरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया उसकी नाक खाक आलूद हो, फिर उस कि नाक खाक आलूद हो, फिर उस कि नाक खाक आलूक हो, अर्ज़ की गई किसकी या रसूलल्लाह ! फरमाया उसकी जिसने बुढ़े माँ बाप या दोनों में से एक को पाया फिर भी जन्नती ना हुआ (मुस्लिम शरीफ जिल्द एक सफा 314)

ज़िक्र कि गई हदीसो की रोशनी में माँ बाप के साथ हुस्ने सलुक की अहमियत खूब वाज़ेह है और ये साबित होता है के माँ बाप के साथ हुस्ने सलूक जिहाद से अफज़ल और जन्नत हासिल करने का ज़रीया है मगर ख्याल रहे मज़कुरा अहादिस में मुतलकन हुस्ने सलुक का ज़िक्र है जो माँ बाप के सारे हुकूक़ को शामिल है यानि माँ बाप का हर हक़ जो अदा कर दिया जाऐ वोह हुस्ने सलुक है अब हम मज़ीद वज़ाहत के लिए एक के बाद दुसरे माँ बाप के चन्द हुकूक़ ज़िक्र करते हैं जिनकी अदायगी बच्चों के लिए बहर हाल ज़रूरी है

पहला हक़:- बच्चों पर माँ बाप का पहला हक़ ये हे के बच्चे अपने माँ बाप के हर जाईज़ हुक्म को मानें और उस पर अमल अपना फर्ज़ समझें के हदीस शरीफ मे उसकी बड़ी फज़ीलत आई है नीचे एक हदीस दरज की जाती है पढ़ें और सबक लें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीअलल्लाहो अन्हो से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलेहि वसल्लम ने फरमाया जिस ने इस हाल में सुबह की के अपने माँ बाप के बारे मे अल्लाह का फरमा बरदार है (यानी अल्लाह के हुक्म के मुताबिक माँ बाप की इताअत करता है) उसके लिऐ सुबह ही जन्नत के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर एक ही हो (माँ या बाप) तो एक दरवाजा खुलता है, और जिस ने उस हाल मे सुबह की के माँ बाप के बारे में खुदा की ना फरमानी करता है (माँ बाप की इताअत नही करता) तो उसके लिए सुबह ही जहन्नम के दो दरवाजे खुल जाते हैं और अगर एक हो तो एक खुलता है, एक शख्स ने दरयाफत किया के अगरचे माँ बाप उसपर जुल्म करते हों? फरमाया अगरचे जुल्म करते हों, अगरचे जुल्मे करते हों- (मिशकात शरीफ सफा नं. 421)

इस हदिस से उन इस्लामी भाईयों को इबरत हासिल करनी चाहिए जो माँ बाप की बातों को सुनकर अनसूनी कर देतें हैं और हुक्म मानने में जल्दी नही करते या हुक्म तो मानते हैं। मगर रज़ा व रग़बत से नही बल्के बद दिली और लापरवाही से। जिस से यक़िनन माँ बाप को तकलीफ पहुँचती है, इसी तरह ये हदीस उन लोगों के लिए भी दरसे इबरत है जो माँ बाप के साथ ''जैसा करोगे वैसा भरोगे'' के मुताबिक सुलुक करते हैं यानी माँ बाप ने अगर उनके साथ कोई ना इन्साफी कि है या कभी जुल्म किया हैं, तो वोह भी बदले मे ना इन्साफी और जुल्म ही करते हैं, उन्हें याद रखना चाहिऐ के माँ बाप अगर ज़ालिम हों जब भी सबर व बरदाशत के साथ उनकी फरमा बरदारी करनी चाहिऐ के यही शरीअत का हुक्म है, माँ बाप के जुल्म का बदला जुल्म से देना अपने लिए जहन्नम का दरवाजा खोलना है।

दूसरा हक़:- माँ बाप के साथ हमेशा नरमी व खन्दा पेशानी के साथ बरताव करें उनके किसी जाईज़ काम पर ना गवारी का इज़हार ना करें ना सख्त कलामी करे और ना ही झिड़क कर जवाब दें के इन चिज़ो से माँ बाप को तकलीफ होगी और नतीजा बुरा होगा, इस ताअलुक़ से दो हदीसे दरज की जाती हैं उन्हें पढ़ें और माँ बाप के साथ उमदा बरताव का उमदा नतीजा और माँ बाप पर नज़र गज़ब डालने के मुतालिक हुज़ूर का इरशाद मुलाहिज़ा किजिऐ

(1) हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहो ताअला अन्हू बयान करते है की रसुलुल्लाह सललल्लाह अलेहि वसल्लम ने फरमाया के माँ बाप के साथ हुस्ने सूलुक करने वाली औलाद अगर अपने माँ बाप को मोहब्बत भरी निगाहों से देखें तो हर निगाह के बदले में अल्लाह ताअला उस के लिए एक मक़बूल हज का सवाब लिख देता है सहाबा ने अर्ज़ किया या रसुल्लाह सल्लाल्लाह अलैहि वसल्लम अगरचे कोई शख्स हर दिन सो मरतबा अपने माँ बाप को देखे ? इरशाद फरमाया हां अल्लाह ताअला बहुत बडा और उमदा है- (मीशकात शरीफ सफा नं. 421)

(2) हज़रते आयशा सीद्दीक़ा रदीयल्लाह ताअला अनहा से रिवायत है रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स ने अपने बाप के साथ अच्छा बरताव नहीं किया जिस ने अपने बाप को तेज़ नज़र से देखा।

इन हदीसों से साबित हुआ कि माँ बाप को मोहब्बत भरी नज़र से अगर देखा जाए तो एक मक़बुल हज के बराबर सवाब मिलता है और अगर उन पर नाराज़गी की नज़र डाली जाए तो यह उन के साथ बद सलूकी है।

तीसरा हक़:- माँ बाप का तीसरा हक़ ये हे के अगर वोह किसी बात पर बच्चों से नाराज़ हो जायें तो बच्चों को चाहिऐ के जल्द से जल्द अपने माँ बाप को राज़ी करने की पुरी-पुरी कोशिश करें और जिस बात पर नाराज़गी हो उससे परहेज़ करने और आईन्दा फरमा बरदार रहने का अहद करें के माँ बाप की नाराज़गी खुदा की नाराज़गी का सबब और माँ बाप की फरमा बरदारी और उनकी रज़ा खुदा की खुशनूदी का सबब है, लिजिऐ नीचे दरज चन्द रीवायते पढ़ें और माँ बाप की नाराज़गी का वबाल और उस के बुरे नतीजा पर गौर करें !

(1) हज़रते अबू उमामा रदीयल्लाहु अन्हू से रिवायत है के एक शख्स ने अर्ज़ की या रसुलुल्लाह माँ बाप का बच्चों पर क्या हक़ हैं ? फरमाया वोह दोनों तेरी जन्नत और दोज़ख हैं
(मीशक़ात शरीफ सफा नं. 421)

(2) हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदीयल्लाहु अन्हूमा से रिवायत है के हुजूर सल्लल्लाहू अलेहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह ताअला की रज़ा बाप की रज़ा मे है और अल्लाह ताअला की नाराज़गी बाप की नाराज़गी में है (तीरमिज़ी शरीफ सफा नं. 12)

(3) हज़रते अबू हुरेरा रदीयल्लाहो अन्हो कहते हैं कि रसुलल्लाह सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया बाप की इताअत अल्लाह की इताअत है और बाप की ना फरमानी अल्लाह की ना फरमानी है (फतावा रज़वीया)

(4) हुजूर सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया बाप जन्नत के दरवाज़ो में से सब से बेहतर दरवाज़ा है, तो अगर तुम चाहो तो उस दरवाज़ा की हिफाजत करो और अगर चाहा तो जाये कर दो (मीशकात शरीफ सफा नं. 420)

मज़कुरा अहादिस से माँ बाप की नाराज़गी और उनकी खुशनूदी के अच्छे बुरे नतीजे खूब वाज़ेह हैं जिनसे ये साबित होता है के माँ बाप की रजा अल्लाह ताअला की रजा और जन्नत में दाखिल होने का सबब है और माँ बाप की नाराज़गी अल्लाह ताअला की नाराज़गी और जहन्नम में जाने का सबब है, इस लिऐ बच्चों को चाहिऐ के वोह हर हाल मे माँ बाप को राजी रखने की पुरी पुरी कोशिश करें और उनकी नाराज़गी से डरते रहें ।

चोथा हक़:- माँ बाप का एक अहम हक़ ये है के अगर बच्चों के पास माल हो और माँ बाप को उस की ज़रूरत हो तो बच्चों परलाज़ीम है के अपना हलाल और नफीस माल माँ बाप पर खरच करने में दरेग़ ना करें बल्के अपने माल को और खुद अपनी ज़ात को अपने माँ बाप की मीलकियत तसव्वूर करें और खुशी-खुशी अपने माल को माँ बाप पर खर्च करें, इस ताअलुक़ से सिर्फ एक रिवायत नीचे दरज की जाती है उसे पढ़ें और माँ बाप के मुक़ाबला में अपनी और अपने माल की हेसियत देखें।

एक साहब बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर अर्ज़ करने लगे, या रसुलूल्लाह ! मेरे माँ बाप मेरा माल ले लेना चाहते हैं तो में क्या करूं ? हुजूर ने फरमाया उन्हे मेरी बारगाह मे हाज़िर करो, जब वोह हाज़िर हुऐ तो हुजूरे अक़दस सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने उन से इरशाद फरमाया, तुम्हारा बेटा कहता है के तुम उसका माल ले लेना चाहते हो, बाप ने अर्ज़ की हुजूर उससे दरयाफ्त फरमाऐं के में वोह माल लेकर क्या करता हुं ? यही ना के उस के अज़ीज़ो पर खरच करता हुं, या मेरे और मेरे बाल बच्चों का खर्च चलता है इसी दरमीयान हज़रते जिब्राईल अलेहिस्सलाम हाज़िरे खिदमत हुऐ और अर्ज़ की या रसुलुल्लाह इस बुढ़े मर्द ने अपने दिल में कुछ नज़मे तरतीब दीये हैं जो अभी खुद उसके कान ने भी नही सुने है हुजूर सललल्लाहू अलेहि वसल्लम ने फरमाया तुमने अपने दिल में जो नज़मे कहे है वोह सुनाओ, उस शख्स ने कहा या रसुलूल्लाह यक़ीनन हुजूर के मोअज ज़ात से हमारा यकीन बढ़ता रहता है, फिर नज़मे पढ़ने लगा जिसका तर्जुमा यह है।

- मैने तुझे गीज़ा दी जबसे तू पैदा हुआ और बचपन से तेरा बोझ उठाया और तूं मेरे माल से बराबर सैराब होता रहा।
- जब कोई रात बीमारी का ग़म लेकर तुझ पर उतरती, तो मैं तेरी बीमारी की वजह से रात भर जाग कर सुबह करता।
- मेरा दिल तेरे मरने से डरता हालांके मुझे खूब माअलुम था के मौत याकिनी है और सब पर मुसल्लत की गई है।
- मेरी आँखे इस तरह बहती जैसे वोह मर्ज़ जो रात में तुझे हुआ था-हक़ीक़त में मुझे हो गया हो, मैने तुझे यूं पाला।
- लेकिन जब तू परवान चड़ा और उस उमर को पहुंचा जिसमें मुझे उम्मीद लगी हुई थी के इस उमर में तूं मेरे काम आऐगा।
- तो तुने उस का बदला मुझे सख्ती और बद इख्लाकी से दिया- जैसे तेरा ही मुझ पर फज़ल व अहसान है।
- ऐ काश अगर तुने बाप के हक़ का लिहाज़ नही किया था-तो ऐसा ही करता जैसा पास का पड़ौसी करता है।
- पड़ौसी ही जैसा हक़ तुने मुझे दिया होता और मुझसे उस माल मे-जो दर असल तेरा नही मेरा ही है बखिली ना करता।

इन अशआर को सुन कर हुजूरे अकदस सललल्लाहु अलेहि वसलल्लम की आँखों से आंसू जारी हो गऐ और उस बेटे का गिरीबान पकड़ कर इरशाद फरमाया ! जा तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है। (कन्जुल उम्माल जिल्द नं. 22 सफा नं. 57)

इस रिवायत से माँ बाप के मक़ाम व मर्तबा का अन्दाज़ा होता है और उनके हक़ की अहमियत भी वाज़ेह होती है, लिहाज़ा वोह लोग जो माँ बाप पर अपना माल खर्च करने मे बखिली करते हैं उन्हें इस रिवायत से सबक़ हासिल करना चाहिऐ और ये याद रखना चाहिऐ के माँ बाप के बच्चों पर इस क़द्र अहसानात है कि बच्चे उनके अहसानात का बदला पुरा-पुरा दे ही नही सकते, कोई शख्स अपने बचपन की बे बसी और माँ बाप के अहसानात और उनकी शफक़तों को याद करे तो यक़ीकन अगर उसके पास थोड़ी सी भी

अक़ल हो तो माँ बाप के हुकूक़ की अदायगी में ग़फलत नहीं बरतेगा, ज़रा एक लम्हा के लिए ठण्ड़े दिल से सोचिए ना, ये वही बाप तो है के जब बचपन मे आप इस क़द्र मजबूर और बे बस थे के खुद अपने हाथ से लुक़मा उठा कर अपने मुँह मे डालने की ताक़त नहीं थी और हाथों से कपड़ा नहीं पहन सकते थे, तो यही बाप अपने हाथों से आप के मुँह मे लुक़मा डालता और अपने हाथों से आपको कपड़े पहनाता था, ये वही बाप तो है के जब बचपन में आप बीमार हो जाते थे और खुद दवा इलाज कराने की समझ नही थी किसी से अपनी परेशानी बयान नही कर सकते थे, तो इसी बाप को आपकी सेहत व सलामती की फिकर होती थी, आपके लिऐ बहुत सारी परेशानीयाँ झेलता मगर दवा इलाज कराने मे किसी क़िस्म की कोताही नहीं करता था बचपन मे जब आप कोई फरमाईश करते और ज़िद करने लगते, तो यही बाप आपकी फरमाईश और ज़िद पुरी करने की पूरी-पूरी कोशिश करता मगर आपकी पेशानी पर ग़म की लकीर देखना गवारा नही करता था। गर्ज़ की तरह-तरह की मुसीबत व परीशानी को बरदाश्त करके बाप ने आप को परवान चढ़ाया और आप जवान हुऐ।

इसी तरह माँ के अहसानात पर भी एक नज़र डालिऐ और देखिऐ ये वही माँ है जो नो महिने तक आप को अपने पेट मे लिए रही और फिर पेदाइश के बाद आप की जिस्मानी नशो नुमा के लिऐ अपने पिस्तानों से आपको दूध पिलाती रही, ठण्डी के मौसम में जब आपके पेशाब से बिस्तर भीग जाता तो आपको ठण्डी से बचाने के लिए माँ खुद तो भीगे बिस्तर पे सो जाती मगर आपको अपने सिने पर सुलाती, और जब बचपन मे कभी आप माँ के बदन पर पाखाना कर देते तो माँ के चेहरे पर नाराज़गी का कोई असर पैदा नहीं होता बल्के वोह निहायत खन्दा पेशानी के साथ आपकी गन्दगियों को अपने हाथों से साफ करती और फिर मोहब्बत से आपको अपने सिने से लगा लेती, इसी तरह अगर आपको किसी किस्म की कोई

परेशानी ला हिक़ होती तो माँ बेक़रार हो जाती और आपको आराम पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश करती ग़र्ज के माँ ने बड़े लाड प्यार से आपकी परवरिश की और खिला पिला कर जवान किया।

अब आप ग़ोर करें आपके उपर माँ बाप के ये अहसानात और उनकी शफक़तें सिर्फ इसी ख्वाहिश और तमन्ना में तो थीं के बुड़हापे में आप उनका सहारा बनेगें और उन्हें आराम पहुंचानेकी कोशिश करेंगे, मगर खुदा न खास्ता आप माँ बाप के अहसान फरामोश निकले और बुढ़हापे में उनके साथ सख्ती का बरताव करने लगे और ना फरमान हो कर माँ बाप की उम्मीदों पर पानी फेर दिया तो बताइऐ माँ बाप का दिल किस क़द्र दुखी होगा ? और क्या आप की इस सरकशी व अहसान फरामोशी को अल्लाह ताअला मुआफ फरमाऐगा ? नही हरगिज़ नही लिहाज़ा प्यारे इस्लामी भाई। माँ बाप को हर तरह से आराम पहुँचाने की कोशिश करो और उन पर अपना माल खर्च करने में हरगिज़ हरगिज़ बखिली से काम ना लो इसी में दुनिया और आखिरत की भलाई है।

मज़कुरा तफसील और आयात व अहादिस की रोशनी मे माँ बाप के अहम हुकूक़ मज़कुर हुऐ अब नीचे माँ बाप की इताअत और उनके साथ हुस्ने सुलूक पर अल्लाह व रसूल सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने जिन इनामात की खुश खबरीयाँ और बशारतें दी हैं उन का ज़िक्र किया जाता है पढ़ें और अपने परवर दीगार की बन्दा नवाज़ी के जलवे देखें।

माँ बाप की इताअत के उमदा नतीजे:-

(1) हज़रते मआवीया विन जाहिमा बयान करते हैं के वह हुजूरे अक़दस सललल्लाहु अलेहि वसलल्लम के पास आऐ और कहा या रसुलुल्लाह ! मेने जिहाद का इरादा किया है और में आपके पास मशवरा के लिऐ आया हुँ आपने फरमाया क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है। वोह बोले है आपने फरमाया उसके साथ चिपटे रहो क्यों के जन्नत उसके पेर के पास है (मिशकात शरीफ सफा नं. 421)

(2) रिवायत है के एक शख्स उस्ताद अबू इस्हाक़ के पास आया और कहने लगा के मेने कल रात ख्वाब में देखा के आप की दाड़ी हिरे जवाहिरात से मुज़यन थी, उस्ताद अबू इस्हाक़ ने फरमाया तुमने सच कहा क्यों के कल रात सोने से पहले मैंने अपनी दाड़ी अपनी माँ के कदमों से लगा दिया था लिहाज़ा ये उसी का सिला है

(3) हज़रते अनस रदीयल्लाहो अन्हु बयान करते हैं के रसुलल्लाहु सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स अपने माँ बाप के साथ नेकी करे उसके लिए तुबा (जन्नत का एक साया दार पेड़) है और अल्लाह ताअला उसकी उमर में ज़्यादती करता है।

(4) हज़रते इब्ने उमर रदीयल्लाहु अन्हु बयान करते है के रसुलूल्लाह सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया तीन आदमी सफर कर रहे थे, उनको बारिश ने आ लिया, उन्होंने पहाड़ के अन्दर एक ग़ार में पनाह ली, ग़ार के मुँह पर पहाड़ से एक चट्टान टूट कर आ गिरी और ग़ार का मुँह बन्द हो गया फिर उन्होंने एक दूसरे से कहा तुमने जो नेक अमल अल्लाह के लिए किये हों उनके वसीला से अल्लाह से दुआ करो, शायद अल्लाह ताअला ग़ार का मुँह खोल दे, उनमें से एक ने कहा ऐ अल्लाह ! मेरे माँ बाप बुढ़े थे और मेरी एक छोटी बच्ची थी, मैं जब शाम को आता तो बकरी का दूध निकाल कर पहले अपने माँ बाप को पिलाता फिर अपनी बच्ची को पिलाता, एक दिन मुझे देर हो गई में हस्बे आदत दूध लेकर माँ बाप के पास गया, वोह सो चुके थे मैने उनको जगाना ना पसन्द किया और उनके दूध देने से पहले अपनी बच्ची को दूध देना ना पसन्द किया, बच्ची रात भर मेरे क़दमों मे रोती रही और में सुबह तक दूध लेकर माँ बाप के सिरहाने खड़ा रहा , ऐ अल्लाह तुझे खुब इल्म है के मैने ये फेल सिर्फ तेरी रज़ा के लिए किया था तू हमारे लिए इतना कुशादगी कर दे के हम आसमान को देख लें बस, अल्लाह ताअला ने उन के लिए कुशादगी करदी यहां तक के उन्होंने आसमान को देख लिया (बुखारी शरीफ)

मज़कुरा अहादिस से माअलुम हुआ के माँ बाप के साथ नेक सलूक और उन की इताअत अल्लाह ताअला के नज़दीक एक महबुब काम है इस अमल से जन्नत में दाखिला होगा और जहन्नम से निजात मिलेगी, उमर में ज़्यादती होगी, और दुआऐं क़बूल होगी इसके अलावा भी बहुत सारी खुश खबरीयाँ हैं हमने यहाँ इखतसार के पेशे नज़र चन्द रिवायतों के ज़िक्र पर इकतफा किया अब आगे माँ बाप के साथा बद सलुकि का अन्जाम भी पढ़ें और अपने अन्दर इन्क़लाब लाने की कोशिश करें-

माँ बाप के साथ बदसलुकी का अन्जाम:-

जिस तरह माँ बाप की इताइत व फरमाबरदारी दुनिया और आखिरत मे बच्चों के लिए इन्तहाई नफअ बख्श है इसी तरह माँ बाप के साथ बद सलुकि और नाफरमानी बच्चों के लिए दुनिया और आखिरत में इन्तहाई नुकसान देह है बल्के उसके बुरे नतीजों का जहुर दुनिया में हो जाता है और आखिरत में तो ज़िल्लत और रूसवाई का सामना करना ही पड़ेगा। लिजिए इस सिलसिले कीभी चन्द अहादिस पढ़ते चलिये ।

(1) हुजुरे अक़दस सलल्लाहु अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सब गुनाहों की सजा जिस क़द्र चाहे अल्लाह ताअला क़यामत तक के लिऐ मोअखर कर देता है सिवाऐ माँ बाप की ना फरमानी के कि उसकी सजा मरने से पहले जिन्दगी में ही देता है । (कनज़ल उम्माल जिल्द 2 सफा नं. 366)

(2) हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं माँ बाप की ना फरमानी से बचो, क्यों के जन्नत की खुशबू हज़ार साल की दुरी से सून्धी जाऐगी और माँ बाप का ना फरमातन उस की खुशबू न सूंघ सकेगा इसी तरह रिश्ता तोड़ने वाला ! बुढ़ाज़ानी और घमण्ड से इज़ार (टखनो से निचे) लटकाने वाला भी (जन्नत की खुश्बू नही पाऐगा) बे शक किबरी याई तो सिर्फ खुदाऐ ताअला ही के लिऐ है (तफसीर मदारिक सफा नं. 312)

(3) हज़रते अबू हुरेरा रदीयल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसुलुल्लाहु सललल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया वोह मलउन है जो अपने माँ बाप को सताऐ वोह है मलउन जो अपने माँ बाप को सताऐ, वोह मलउन है जो अपने माँ बाप को सताऐ

(4) हज़रते अबु उमाम रदीयल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सललल्लाहु अलेहि वसलल्लम ने फरमाया अल्लाह ताअला तीन क़िस्म के लोगों का कोई फ़र्ज और कोई नफ्ल क़बूल नहीं फरमाता है माँ बाप के ना फरमान, सदक़ा देकर अहसान जताने वाला, तक़दीर को झुटलाने वाला-

(5) हज़रते उमर बिन मुररा जोहनी रदीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुजूर सललल्लाहु अलेहि वसलल्लम की बारगाह मे एक शख्स आया और उस ने कहा या रसुलुलाह मे गवाही देता हुँ के अल्लाह के सिवा कोई माअबुद नही और बेशक आप अल्लाह केरसूलहैं और पाँचोंवक्त नमाज़े पढ़ता हुँ अपने मालकी ज़कात देता हूं रमज़ान के रोज़े रखता हुँ नबी सललल्लाहु अलेहि वसलल्लम ने फरमाया जो शख्स इस अमल पर फौत हो गया वोह कयामत के दिन नबीयों,सिद्दीक़ों शहीदों के साथ होगा, फिर आपने दोनों उगलियाँ खड़ी करके फरमाया यह शर्त है कि उसने माँ बाप की ना फरमानी ना की हो-(तिबयान जिल्द 1 सफा नं. 45)

(6) हज़रते अब्दुल्ला बिन अबी ओफा रदीयल्ला हु अन्हु बयान करते हैं कि हम नबी सललल्लाहु अलेहि वसल्लम के पास बेठे हुऐ थे आप के पास एक शख्स आया और हमें उसने कहा एक आदमी मरने को करीब है, उससे कहा गया ला इलाहा इल्लला पढ़ा वोह नही पढ़ सका, आप ने दरयाफत किया वोह नमाज़ पढ़ता था ? उस ने कहा हाँ, फिर रसुलूल्लाह सललल्लाहु अलेहि वसल्लम उठे और हम भी आपके साथ उठे, आप उस जवान के पास गये और फरमाया कहो ला इलाहा इल्लल्लाह, उसने

कहा मुझसे नही पढ़ा जाता, आपने उसके बारे में पुछा, किसी ने कहा ये अपनी माँ की ना फरमानी करता था। तो नबी सललल्लाह अलेहि वसल्लम ने पुछा क्या इसकी माँ ज़िन्दा है ? लोगों ने कहा हां। आपने फरमाया उसको बुलाओ, वोह आई तो आप ने पुछा ये तुम्हारा बेटा है ? उसने कहा हां ! आप ने फरमाया ये बताओ अगर आग जलाई जाऐ और तुम से ये कहा जाऐ कि अगर तुम शफाअत करो तो उस को छोड़ देते है वरना उसको आग मे डाल देते है तो क्या तुम इसकी शफाअत करोगी ? उसने कहा या रसुलल्लाह उस वक्त में इस की शफाअत करूंगी,आपने फरमाया तब तुम अल्लाह को गवाह करो और मुझको गवाह करके कहो के तुम इससे राज़ी हो गई हो उस औरत ने कहा ऐ अल्लाह ! मैं तुझको गवाह करती हुं और तेरे रसुल को गवाह करती हुं के मे अपने बेटे से राजी हुं ! फिर रसुलूल्लाह सलल्लाहु अलेहि वसल्लम ने फरमाया ऐ लड़के अब कहो ला इलाहा इल्लाहा वाहदहु ला शरीकालहु वअशहदो अन्ना मोहम्मदन अबदुहु व रसुलुहु तो उस लड़के ने कलमा पढ़ा, पस रसुलूल्लाह सलल्लाहू अलेहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह का शुक्र है जिसने इसको मेरी वजह से आग से निजात दी(तिबयानुल कुरआन जिल्द1 सफा नं. 466)

(7) रिवायत है के हज़रत अवाम बिन जोशब रहमतुल्लाह अलैह जो के तबअ ताबईन से हैं 148 हिज़री मे इन्तक़ाल किया, फरमाया मैं एक मौहल्ला में गया उसके किनारे पर क़ब्रस्तिान था, असर के वक़्त एक क़ब्र खुली और उसमें से एक आदमी निकला जिसका सर गधे का और बाक़ी बदन इन्सान काथा,उसने तीन आवाजें गधे की तरह निकाली फिर क़ब्र बन्द हो गई, वहां एक बुढ़िया बेठी सूत क़ात रही थी, एक औरत ने मुझसे कहा उन बड़ी बी को देखते हो, मैने कहा इसका क्या मामला है ? कहा ये उस क़ब्र वाले की माँ है,वो शराब पीता था,

जब शाम को आता, माँ नसीहत करती ऐ बेटे खुदा से डर ! कब तक इस नापाक को पिऐगा, वे जवाब देता के तू क्यों गधे की तरह चिल्लाती है, फिर ये शख्स असर के बाद मरा तब से हर रोज़ असर के बाद इसकी क़ब्र खुलती है और तीन आवाजें गधे की आती है फिर कब्र बन्द हो जाती है ।(हुकूक वालिदेन सफाह 35)

इन रिवायतों से माअलूम हुआ के वालिदेन का ना फरमान दुनिया में भी सज़ा पाता है और मरने के बाद भी मुसीबत में गिरफ्तार रहता है। वालिदेन की ना फरमानी के सबब इन्सान जन्नत की खुशबू से महरूम हो जाता है, वालिदेन की ना फरमानी करने वाले की कोई इबादत मक़बूल नही होती, उसका खातमा खराब होता है और मरते वक्त कलमाऐ शहादत पढ़ना नसीब नही होता, ऐ अल्लाह हमसे हमारे वालिदेन को राज़ी रख और उनको हमारी तरफ से बेहतरीन जज़ा अता फरमा-

अल्लाह की नाफरमानी में वालिदेन की इताअत नही:- वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म सिर्फ जाईज़ उमूर मे है, अगर वो कोई ना जाईज़ काम करने का हुक्म दें तो उसमें उनकी इताअत नही की जाऐगी जैसे के अल्लाह आज़्वजल ईरशाद फरमाता है-

- और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की और अगर वो तुझसे कोशिश करें के तू मेरा शरीक ठहराऐ जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना ना मान(कन्जुल ईमान)

इस आयत का शाने नुजूल ये है के हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रदीयल्लाह अन्हु जो साबकीन अव्वलीन सहाबा में से थे और अपनी वालिदा के साथ अच्छा सुलूक करते थे, जब इस्लाम लाए तो आपकी वालिदा हमना बिन्ते अबु सुफयान ने कहा तुने ये क्या नया काम किया ? खुदा की कस्म अगर तू इससे बाज़ ना आया तो ना में खाऊं ना पिऊं यहां तक के मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिए

बदनामी हो और तुझे माँ का क़ातिल कहा जाए, फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक दिन और एक रात ना खाया पिया नासाया में बैठी, उससे ज़ईफ हो गई फिर एक दिन रात और इसी तरह रही तब हज़रते सअद उसके पास आए और फरमाया ऐ माँ। अगर तेरी सौ जानें हों और एक-एक करके सब ही निकल जाऐं तो भी में अपना दीने इस्लाम छोड़ने वाला नहीं तु चाहे खा या चाहे मत खा,

जब वो हज़रते सअद की तरफ से मायूस हो गई तो खाने पिने लगी उस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फरमाई और हुक्म दिया के वालिदेन के साथ हुस्ने सुलूक किया जाए, अगर वो कुफरो शिर्क का हुक्म दें तो ना माना जाए क्यों के ऐसी इताअत किसी मखलूक़ की जाईज़ नहीं जिस में खुदा की ना फरमानी हो-

माँ का हक़ बाप के हक़ से ज़्यादा है:-

- अल्लाह ताअला इरशाद फरमाता है- और हमने इन्सान को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई और उसका दूध छूटना दो वर्ष में है ये के हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का आखिर मे मुझी तक आना है- (सूरऐ लुक़मान)
- एक और मक़ाम पर इरशादे रब्बानी है- और हमने आदमी को हुक्म दिया के अपने माँ बाप से भलाई करे उसकी माँ ने उसे पेट म रखा तक्लीफ से और जनी उसको तक्लीफ से (सुरऐ अहक़ाफ)

इन दोनों आयतों से मालुम हुआ की माँ का हक़ बाप के हक़ से ज़्यादा है और वो हुस्ने सलूक़ की ज़्यादा मुस्तहक़ है क्योकि माँ एक लम्बी मुदत तक औलाद को पेट में रखती है और फिर जनने की तक्लीफ के साथ बच्चे को दूध पिलाने और देख रेख की जिम्मेदारी माँ ही निभाती है इस लिए अल्लाह तआला ने माँ को बुलन्द मक़ाम व मर्तबाअता फरमाया और उसको हुस्ने सलूक का ज़्यादा मुस्तहक़ क़रार दिया है इसी तरह हुज़ूरे अक़दस सलल्लाहु अलेहि वसल्लम ने भी माँ के साथ हुस्ने सलूक की बहुत ताकिद फरमाई है चन्द अहादिस मुलाहिज़ा करें।

(1) एक शख्स ने खिदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की ! या रसुलूल्लाह ! सबसे ज़्यादा कौन उसका मुस्तहक़ है के में उस के साथ अच्छा सलूक करूं ? फरमाया तेरी माँ, अर्ज़ की फिर फरमाया तेरी माँ, अर्ज़ कि फिर? फरमाया तेरी माँ अर्ज़ की फिर ? फरमाया तेरा बाप, (मुस्लीम शरीफ सफा नं. 312)

(2) एक मुकाम पर हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं में आदमी को वसीयत करता हुं उसकी माँ के हक़ में, वसीयत करता हुं उसकी माँ के हक़ में, वसीयत करता हुं उस की माँ के हक़ में, वसीयत करता हुं उस के बाप के हक़ में-
(इब्ने माजा सफा नं.260)

(3) हज़रते अबू हुरेरा रदीयल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं एक शख्स अपनी माँ को उठा कर तवाफ करा रहा था, तवाफ के बाद उस ने हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्ला क्या मैंने अपनी माँ का हक़ अदा कर दिया ? हुजूर ने फरमाया नही तेरी पेदाईश के वक्त तकलीफ के जो झटके लगे उनमें से एक झटका का हक़ भी अदा नही हुआ। (इब्ने कसीर जिल्द नं. 3 सफा नं. 35)

इन दोनों हदीसों से मांअलुम हुआ के माँ का हक बाप से ज्यादा है और वह हुस्ने सलूक की ज़्यादा मुस्तहक़ है, मगर ख्याल रहे ये तकददुम और ज्यादती खिदमत में है हर मुआमल मे नही मसलन माँ बाप दोनों एक साथ पानी मांगें तो पहले माँ को दे फिर बाप को या मसलन एक सौ रूपये हों और माँ को ज़्यादा देने से कोइ शरई रूकावट ना हो तो 75 रूपये माँ को दे और 25 बाप को मगर अदब और ताअज़ीम के मुआमला में माँ पर बाप को तरजीह दी जाऐगी। मसलन अगर कमरा में माँ बाप दोनों एक साथ दाखिल हों तो बाप की ताअज़ीम की नीयत से खड़ा हो चलने में उससे आगे ना बढ़े और ना ही उस के बराबर बेठे-

माँ बाप के हुकूक मरने के बादः- माँ बाप के इन्तेक़ाल के बाद उनका सब से पहला और अहम हक़ उन के जनाज़े की तजहीज़ गुस्ल कफन नमाज़े जनाज़ा और दफन है और इन कामों में सुनन व मुस्तहबात की रियायत ज़रूरी है उसके बाद देखें अगर माँ बाप पर किसी का कोई क़र्ज हो तो जल्द उसे अदा करने की कोशिश करें अगर माँ बाप ने कोई वसीयत की हो तो शरीयत के मुताबिक़ वसीयत पूरी करें नमाज़ रोज़े की क़ज़ा बाक़ी हो तो फिदया दें हज ना किया हो तो खुद उन की जानिब से हज करें या हजे बदल कराएं उनके रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ हमेशा नेक सलूक करते रहें उनके लिए दुआऐ इसतिग़फार करते रहें, उनके लिए नेक आमाल करे और इसाले सवाब करता रहे, और इस बात का खास खयाल रखें के दुनिया में कोई गुनाह का काम ना करें वरना क़ब्र मे माँ बाप की रूह को तकलीफ पहुंचेगी क्योंकि हफ्ता मे एक मर्तबा क़ब्र मे माँ बाप के सामने बच्चों के आमाल पेश होते हैं, अच्छे आमाल पर उन की रूह खुश होती है और बूरे आमाल पर रंजीदा ! हम यहां चन्द अहादिस ज़िक्र करते हैं जिनमें बादे इन्तक़ाल माँ बाप के मज़कुरा हुकूक़ का ज़िक्र है उन्हें आप पढ़ें और अमल करने की पूरी पूरी कोशिश किजीऐ (ज़ेल की तमाम अहादिस माँ बाप के हुकूक़ तरतीब मौलाना अब्दुल मुबीन नुअमानी से मनकुल है-)

(1) एक अन्सारी रदीयल्लाहु अन्हु हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुऐ और अर्ज़ की या रसुलुल्लाह ! माँ बाप के इन्तक़ाल के बाद उन के साथ हुस्ने सलूक का कोई तरीक़ा बाकी है जिसमैं बजा लाऊं ? तो हुजूर ने फरमाया हां चार बातें हैं उनकी नमाज़े जनाज़ा और उनके लिऐ दुआऐ मग़फिरत उन की वसीयत नाफिज़ करना उनके दोस्तों की ताअज़िम करना जो रिश्ता सिर्फ उन्हीं की जानिब से हो नेक बरताऊ से उसको काईम रखना ये वोह नेक सुलुक है कि उनकी मौत के बाद भी उन के साथ करना बाक़ी हैं (इब्ने माजा, सफा नं. 261)

(2)एक सहाबी रदीयल्लाहु अन्हु ने बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर अर्ज़ कि या रसुलल्लाह ! मैं अपने माँ बाप के साथ ज़िन्दगी में नेक सलूक करता था अब वोह मर गऐ तो उनके साथ नेक सलूक की क्या राह है ? फरमाया मरने के बाद नेक सलूक से ये है कि तू अपनी नमाज़ के साथ उनके लिऐ नमाज़ पढ़े और अपने रोजों के साथ उनके लिए रोज़े रखे-(दारे कुत्नी)

(3)हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं जब तुम में कोई शख्स कुछ नफ्ल खेरात करे तो चाहिऐ कि उसे अपने माँ बाप की तरफ से करे कि उसका सवाब उन्हें मिलेगा और इस के सवाब से कुछ ना घटेगा (तीबरानी)

(4) हुजूर सल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं जो अपने माँ बाप की तरफ से हजकरे या उन का कर्ज़ अदा करे रोज़े क़यामत नेकों के साथ उसे अल्लाह ताअला उठाऐगा (तीबरानी)

(5) हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते है जो चाहे कि बाप की क़ब्र में उसके साथ हुस्ने सलुक करे वोह बाप के बाद उस के अजोजों दोस्तो से नेक बरताऊ करें (अबू यलआ)

(6) हुजूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं अपने माँ बाप की दोस्ती पर निगाह रख उसे ना तौड़ना कि अल्लाह तेरा नूर बुझा देगा (बुखारी शरीफ)

(7) हुजूर सलल्लाहू अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं हर दो शम्बा और जुम्मेरात को अल्लाह ताआला के हुजूर आमाल पेश होते हैं और अम्बियाऐ किराम अलेहि सलातो वस्सलाम और माँ बाप के सामने हर जुम्मा को-वो नेकियों पर खुश होते हैं और उन के चेहरों की सफाई व ताबिश बढ़ जाती है तो अल्लाह से डरो और अपने मुर्दो को गुनाहों से रन्ज ना पहुंचाओ-(इमाम हाकीम)

माँ बाप की क़ब्रो की ज़ियारतः- माँ बाप के इन्तेक़ाल के बाद उनके साथ भलाई और हुस्ने सलूक का एक तरीका यह भी है कि रोज़ाना सुबह और अगर मुमकिन हो तो सुबह व शाम और

इस क़द्र ना हो सके तो कम से कम हर जुम्मा को माँ बाप की क़ब्रो की ज़ियारत करे क़द्रे बुलन्द आवाज से सुरह यासीन की तीलावत करें ताकि वोह सुने और उसका सवाब उनकी रूह को बख्शें और उन के लिऐ दुआऐ मग़फिरत करे और रास्ते में जब भी उनकी क़ब्र आऐ तो बेगैर सलाम व फातेहा हरगिज़ ना गुज़रे इस सिलसिला की चन्द रिवायतें नीचे दरज की जाती हैं पढ़ें और अमल करें

(1) जो अपने माँ बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुम्मा के दिन ज़ियारत को हाज़िर हुआ अल्लाह ताअला उसके गुनाह बख्श देगा और माँ बाप के साथ अच्छा सलूक करने वाला लिखा जाऐगा ।

(2) जो हर जुम्मा माँ बाप या एक की ज़ियारते क़ब्र करके वहां यासीन पढ़े यासीन शरीफ में जितने हरफ हैं उन सबकी गिनती के बराबर अल्लाह ताअला उनके लिऐ मग़फिरत फरमा देगा। (अनवारूल हदीस) सफा नं. 405

(3) हुज़ूर सलल्लाहु अलेहि वसल्लम फरमाते हैं जो बा नियत सवाब अपने माँ बाप दोनों या एक की ज़ियारते क़ब्र करे तो एक हजे मक़बूल का सवाब पाऐगा और जो माँ बाप या एक की ज़ियारते क़ब्र बकसरत करता हो फरिश्ते उसकी क़ब्र की ज़ियारत को आयेंगे ।

इन रिवायतों से साबित हुआ के माँ बाप की क़ब्रों की ज़ियारत भी बच्चों के लिए एक नेअमत है लिहाज़ा तमामी इस्लामी भाईयों को चाहिये कि जहां माँ बाप के दिगर हुकूक़ अदा करें वहीं इन्तेक़ाल के बाद माँ बाप की क़ब्रों की ज़ियारत भी बाइसे सआदत जानें और कम से कम जुम्मा के दिन माँ बाप की क़ब्रों पर हाज़री देकर उनके लिऐ दुआऐं मग़फिरत करें मौला ताअला हमारे तमामी इस्लामी भाईयों को माँ बाप के हुकूक़ अदा करते रहने की तोफीक़े रफीक़ अता फरमाऐं आमीन-

बच्चों के हुकूक़:- अल्लाह ताअला ने अगरचे बच्चो पर माँ बाप के बड़े हुकूक़ रखे हैं मगर माँ बाप को भी बच्चों के हुकुक़ से बे नयाज़ नहीं फरमाया बल्कि बच्चों के भी कुछ हुकूक़ माँ बाप पर

लाज़िम फरमा दिया है । ताकी किसी फरीक की हक़ तलफी ना हो आज हमारे बहुत से इस्लामी भाई बच्चों की ना फरमानी और सरकशी का शिकवा करते हैं । जो दरअस्ल माँ बाप की कोताही और उन की ग़फलत का ही नतीजा होता है जो माँ बाप बचपन से ही बच्चों के हुकूक़ की रियायत नहीं करते और बच्चों की तरबीयत के सिलसिला में ला परवाही से काम लेते हैं अकसर उन्हीं को बच्चे की ना फरमानी और सरकशी का सामना करना पड़ता है लिहाज़ा इस्लामी भाईयों को याद रखना चाहिए कि बच्चों से पुरा-पुरा फायदा हासिल करने के लिए बच्चों के हुकूक़ की पुरी-पुरी रिआयत भी ज़रूरी है हम यहां बच्चों के उन ज़रूरी हुकूक़ को जिक्र करते हैं जिनकी रिआयत बच्चों को लाइक और फाइक और फरमां बरदार बनाने के लिए ज़रूरी है ।

पहला हक़ :- पैदाइश के बाद माँ बाप पर बच्चे का पहला हक़ ये है कि किसी नेक और परहैज़गार आदमी सें बच्चे के दाहिने कान में अज़ान और बाऐं कान में इक़ामत कहलाए कि इस अमल से बच्चा शैतान के खलल और उम्मेस्सिबिय जैसी बिमारी से महफुज़ हो जाएगा फिर किसी बूजुर्ग से तहनीक कराए यानि कोई बूजुर्ग खजूर या और कोई मिठी चीज़ चबा कर बच्चे के मुंह में डालें कि इस अमल से बच्चे में खेरो बरकत होती है इस सिलसिला की चन्द हदीसें यहां पढ़िये और अमल करने की कोशिश क़िजिए।

- हज़रते अनस बिन मालिक रदीयल्लाहो ताअला अन्हु बयान करते हैं जब हज़रते अबू तलहा अन्सारी रदीयल्लाहो अन्हु के बेटे अब्दुल्लाह पैदा हुए तो मैं उनको लेकर रसूल्लाह सलल्लहो अलेहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ उस वक्त रसूल्लाह सलल्लाहो अलेहि वसल्लम एक चादर ओढ़े हुए थे और अपने

ऊंट को रोग़न मल रहे थे आपने फरमाया तुम्हारे पास खजूरें हैं ? मैंने कहा हां । फिर मैंने खजूरें आपको पेश की आपने वो खजूर अपने मुंह में डालकर चबाई फिर आपने बच्चे का मुंह खोल कर उसे बच्चे के मुंह में डाल दिया और बच्चा उसको चुसने लगा फिर आप ने फरमाया अंसार को खजुरों से मोहब्बत है और उस बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा (मुस्लिम शरीफ जिल्द नं. 2 सफा 208)

- हज़रते अबू मूसा रदीयल्लाहो अन्हु फरमातें हैं मेरे यहां एक बच्चा पैदा हुआ मैं उसे लेकर नबी सलल्लाहो अलेहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ तो हुजूर ने उस का नाम ईब्राहिम रखा और खजूर चबाकर उसके मूंह में डाला और उसके लिए बरकत की दुआ फरमाई फिर मुझे वापस कर दिया। (बुखारी शरीफ जिल्द 2 सफा 821)
- हज़रते उबैदुल्लाह बिन राफेअ अपने बाप से रिवायत करते हैं- मैंने रसूलल्लाह सलल्लाहो अलेहि वसल्लम को हसन बिन अली के कान में नमाज़ की तरह आज़ान देते हुए देखा जिस वक्त हज़रते फातिमा ने उन्हें जना ।
- हज़रते इमामे हुसैन बिन अली रदीयल्लाहो अन्हुमा की रिवायत है रसूलल्लाह सलल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया जिसके घर में कोई बच्चा पैदा हुआ तो उसने बच्चे के दाहिने कान में आज़ान और बाऐ कान में इक़ामत कही तो उसे उमुस्सिबियान लाहिक़ नही होगी। (तरीकतुल्मुत्तकीन जिल्द 2 सफा नं. 260)

मज़कुरा अहादिसे करीमा की रोशनी में वाज़ेह है कि पैदाईश के फोरन बाद माँ बाप के ज़िम्मा बच्चे का ये हक़ साबित होता है कि वो बच्चे के कान में आज़ान और इक़ामत कहलाए। और किसी बुजुर्ग से तहनीक कराऐ ताके दुनिया मे आने के बाद उसके कान में सबसे पहले अल्लाह और रसूल जल्ला जलालहू और

सल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िक्र की आवाज़ गुंजे जिसकी बरकत से इन्शा अल्लाह तआला वो दुनिया से जाते वक़्त भी अल्लाह और रसूल जल्ला जलालहु और सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम के ज़िक्र ही मे रहेगा और ईमान पर खातमा नसीब होगा और तहनीक से ये फायदा होगा कि बच्चे की ज़बान सबसे पहले जब किसी बुजुर्ग के झुटे की लज़त से आशना होगी तो इन्शा अल्लाह इसकी बरकत से बच्चा दीनदार और माँ बाप का फरमा बरदार होगा-

मगर हमारे अकसर इस्लामी भाई बच्चे के इस पहले हक़ की तरफ तवज्जो नही करते बल्कि ज्यादा तर ऐसे मुस्लमान भी हैं जो बच्चे के पैदा होते ही टी. वी. विडीयो या गाने की कैसेट लगा कर खुशी का ईज़हार करते हैं अब ज़ाहिर है के जब पैदा होने वाले बच्चे के कान मे सबसे पहले शैतानी आवाज जाऐगी तो वो ना तो सच्चा दीनदार बन सकेगा ना ही माँ बाप का फरमा बरदार होगा लिहाज़ा हमारे इस्लामी भाईयों को बच्चे के इस पहले हक़ की अदाएगी की तरफ खास तवज्जो देनी चाहिए कि इसी में उनके लिए दोनों जहांन की भलाई है।

दूसरा हक़ः- माँ बाप पर बच्चों का दूसरा हक़ ये है कि बच्चा जिस दिन पैदा हो उसी दिन उसका नाम रखे यही मुसतहब है और नाम अच्छा रखें जिससे बच्चे का मुस्लमान होना ज़ाहिर हो बल्कि बेहतर ये है कि नाम का मआमला किसी आलिमे दीन या किसी बुजुर्ग पीर के हवाले करदे ताकि वो उमदा नाम तजवीज़ कर के रख दें और अगर खुद नाम रखे तो यह जरूर खयाल रहना चाहिए कि नाम बहर हाल इस्लामी हो जैसे अब्दुल्लाह अब्दुल रहमान, अब्दुल रहीम, गुलाम ग़ौस वगैरह यानी अम्बियाऐ किराम, औलियाए इज़ाम और बुजुर्गानेदीन के नाम पर नाम रखे कि ये बरकत का सबब है खसुसन हुजूर अक़दस सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम के नामे अक़दस ''मुहम्मद'' में बे पायां बरकत है जो दोनों जहान

में बच्चे के काम आने वाली है इसी लिए हुजूर अक़दस सल्लललाहो अलेहि वसल्ल्म ने अपने नामे पाक पर नाम रखने का हुक्म दिया और बुरा नाम रखने से मना फरमाया है नाम से मुतअलिक चन्द अहादीस मुलाहज़ा फरमाऐं ।

- हज़रते अबू दरदा रदीयल्लाहो अन्हु की रिवायत है हुजूर अक़दस सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया, लोगो तुम क़यामत में अपने और अपने बापों के नाम से पुकारे जाओगे सो तुम अपना नाम अच्छा रखा करो। (अबु दाऊद शरीफ पेज 676)
- हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीयल्लाहो अन्हुमा फरमाते है हुजूर अकदस सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया जिस शख्स के तीन बेटे पैदा हो और वो उन में से किसी एक का नाम भी मुहम्मद ना रखे तो वो यक़ीनन जाहिल है (अन्वारुल हदीस)
- हज़रते इब्ने उमर रदीयल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि हज़रते उमर रदीयल्लाहो अन्हु की एक साहबज़ादी का नाम आसिया था तो रसूलल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने उसका नाम जमीला रख दिया (मुस्लिम शरीफ जिल्द नं. 2 सफा नं. 208)
- मोहम्मद बिन उमर बिन अता कहते है कि- मैंने अपनी बेटी का नाम बरां रखा तो मुझसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने कहा कि रसुलूल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने उसको रखने से मना फरमाया है और मेरा नाम पहले बर्रा रखा गया था। रसुलूल्लाह सल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया अपनी पारसाई बयान ना करो अल्लाह ताअला ही खूब जानता है कि तुममे कौन ज़्यादा नेकोकार है, सहाबा ने अरज़ की फिर हम उसका क्या नाम रखें फरमाया तुम उसका नाम ज़ैनब रख दो (मुस्लिम जिल्द 2 सफा नं. 208)
- हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदीयल्लाहो अन्हुमा बयान करते

हैं कि रसुल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारे नामों से अल्लाह ताअला के नज़दीक सबसे ज्यादा पसन्दीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुल रहमान है (मुस्लिम जिल्द 2 सफा 206)

मज़कुरा बाला अहादिसे करीमा की रोशनी मे मालूम हुआ कि हुजूर सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने अच्छे नाम रखने की तालीम दी है और बुरे नाम रखने की मुमानअत फरमाई है बल्कि खुद बुरे नामों को अच्छे नामों से बदल दिया करते थे लिहाज़ा इस्लामी भाईयों को चाहिए कि अपने बच्चों के नाम अच्छे रखें और ऐसा नाम रखने से क़तअन परहेज़ करें जिस में बढ़ाई और तकब्बुर का माना पाया जाता हो या जिस में अपनी पारसाई का इज़हार हो या जो नाम बेमाना हो जैस शम्सुद्दीन, बदरूद्दीन, जलालुद्दीन, मोहीयुद्दीन, फखरूद्दीन, सिराजुद्दीन, निज़ामुद्दीन, कुतबुद्दीन, क़मरूद्दीन वगैरह नाम नही रखना चाहिए कि इनके अन्दर बड़ाई और खुद सताई का माना है और इस क़िस्म के जो बुर्ज़गों के नाम पाये जाते है वो उनके नाम नही बल्कि लक़्ब है जिसमे कोई हर्ज़ नहीं। इसी तरह मोहम्मद ताहा , मोहम्मद यासीन, जैसे नाम भी नही रखना चाहिए कि इनके माना मालूम नहीं इसी तरह मोहम्मद नबी, मोहम्मद, अहमद नबी, अहमद रसूल, नबीयुज्ज़मा जैसे नाम भी रखना ना जाईज़ है कि ग़ैर नबी को नबी कहना लाज़िम आयेगा (इस्लामी इख्लाको आदाब सफा नं. 256)

और लड़कियों के लिये तबस्सुम, फरह, शबीना, शमा फिरोज़ा, सदफ, दिनार चान्दी सोना वगेरह नाम रखना मुनासिब नहीं कि इनके अन्दर भी खुद सताई और तारीफ है अगर भूल-चूक या जहालत की वजह से बच्चों का नाम ग़ैर शरई रख दिया जाए तो आगाही के बाद अच्छे नाम से बदल देना चाहिए और बेहतर ये है कि अगर लड़का हो तो उसका नाम मोहम्मद और लड़की हो तो उसका नाम फातिमा रखें कि ये दोनो नाम बड़े मुक़द्दस हैं और हदीस शरीफ मे इनकी बड़ी फज़ीलत आई है नीचे चन्द अहादीस

ज़िकर की जाती हैं उन्हे पढ़ीये और देखीये अल्लाह ताअला ने अपने महबुब सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम के नामे पाक में किस क़दर बरकत रखी है और बिन्ते रसूलूल्लाहो सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम के नामे पाक फातिमा की क्या फज़ीलत है ।

- हज़रते अबू ओमामा बाहली रदीयल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसके एक लड़का पैदा हो और वो मेरी मोहब्बत और मेरे नामे पाक से तबर्रूक के लिए उसका नाम मोहम्मद रखे वो और उसका लड़का दोनों जन्नत में जाऐगें ।
- हज़रते नबीत बिन शरीत रदीयल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह ताअला ने मुझसे फरमाया ! मुझे अपने इज्ज़तों जलाल की क़सम । जिसका नाम तुम्हारे नाम पर होगा उसे दोज़ख का अज़ाब ना दुंगा ।
- अमीरूल मोमीनीन हज़रते अली करमिल्लाहो वजहुल करीम से रिवायतहै रसुलूल्लाह सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस दस्तर खान पर बैठकर लोग खाना खाऐं और उनमें कोई मेरे नाम (मोहम्मद या अहमद) का होतो वो लोग हर दिन दो बार मुकद्दस किए जाते है
- अमीरुल मोमीनीन हजरते अली करमिल्लाहो वजहुल करीम से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सल्ललललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब कोई क़ौम किसी मशवरा के लिए जमा हो और उनमें कोई शख्स मोहम्मद नाम का हो और उसे मशवरे में शरीक ना करें उनके लिए इस मशवरे में बरकत ना होगी।
- अमीरूल मोमीनीन हजरते अली करमिल्लाहो व वजहुलकरीम

से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब लड़के का नाम मोहम्मद रखो तो उसकी इज्ज़त करो और मजलिस में उसके लिए जगह कुशादा करो और उसे बुराई की तरफ मनसूब ना करो या उस पर बुराई की दुआ ना करो।

- हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदीयल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है की रसूल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह ताअला ने उस (हजरते फातिमा) का नाम फातिमा इस लिए रखा कि उससे मोहब्बत रखने वालों को नारे दोज़ख से आज़ाद फरमाया ।
- हज़रते अबू राफे रदीयल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सल्ललाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया कि जब लड़के का नाम मोहम्मद रखो तो उसे ना मारो और ना ही महरूम रखो। (माखूज़ अज़ जामे उल अहादीस जिल्द 3)

देखा आप ने ? अल्लाह ताअला ने नामे मोहम्मद के अन्दर किस क़दर बरकत रखी है मगर हमारे कितने ऐसे इस्लामी भाई है जो नामे अकदस की बरकत हासिल करने की कोशिश करते हैं ? किसी से पोशीदा नहीं । आज हाल ये है कि बड़ी तमन्नाओं के बाद जब लड़के की विलादत होती है तो उनका नाम गुड्डू, मुन्नु, पप्पु बुद्धु, जम्ई जुम्मेराती वगैरह मोहमल और ला हासिल नाम रखे ज़ाते है इसी तरह लड़कियों में गुड़िया, गुड्डन, मुनिया, नम्मी पम्मी, कम्मी, मेराजुन, अजमेरून जैसे नाम चुने जाते हैं जिसमे ना कोई दुनियावी फाईदा और ना ही आखिरत का फाईदा है !मौला ताअला इस्लामी भाईयों को समझ अता फरमाए, आमीन

तीसरा हक़:- बच्चों का तीसरा हक यह है कि माँ बाप पैदाईश के

बाद सातवें दिन अक़ीक़ा करें की यही बहेतर है और अगर सातवें दिन ना कर सकें तो जब चाहें कर सकते हैं सुन्नत अदा हो जाएगी लड़का के अक़ीक़ा मे बकरा और लड़की के अक़ीक़ा में बकरी ज़िबा करना मुनासिब है और उसके बर अक्स यानी उल्टा किया तो भी कोई हर्ज नही अक़ीक़ा का ये अमल गोया बच्चे को रहन से छुड़ाना है अक़ीक़ा, के दिन ही बच्चे के सर के बाल उतरवाऐं और उन बालों के बराबर चाँदी तोल कर सदका करें कि अहादीस में इसका हुक्म आया है यहां अक़ीक़ा के ताअलुक़ से चन्द अहादीस दर्ज़ की जाती है पढ़ीये और अमल किजिये।

- हर बच्चा अपने अक़ीक़ा के ऐवज रहन है उसकी पैदाईश के सातवें दिन उसकी तरफ से जानवर को ज़िबाह किया जाए उसका सर मुन्डा जाए और उसका नाम रखा जाए (कन्जुल अम्माल हिस्सा 16 पेज 179)
- हज़रते सलमान बिन आमिर ज़बी रदीयल्लाहो अन्हु बयान करते हैं कि मैंने हुजूर सलल्लाहो अलेहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि लड़के के साथ अक़ीक़ा है लिहाज़ा उस की जानिब से जानवर ज़िबह करो। (अनवाररूल हदीस पेज 365)
- हुजूर अक़दस सलल्लाहो अलेहि वसल्लम ने हज़रते इमामे हसन और इमामे हुसैन रदीयल्लाहो अन्हुमा का अक़ीक़ा एक-एक जानवर से किया(अबू दाऊद) और इमाम निसाई की रिवायत मे है के दो-दो मिन्डे से किया। (ऐज़न)

मज़कुरा अहादीस से ये साबित हुआ कि किसी के घर बच्चा या बच्ची पैदा होतो माँ बाप का फर्ज़ बनता है कि वो अपनी औलाद के नाम से अक़ीक़ा करें कि ये औलाद मिलने पर अल्लाह ताअला का शुक्रिया अदा करना औरहुजूर अक़दस सल्लललाहोअलेहि वसल्लम के सुन्नत की पैरवी है मगर हमारे बहुत से इस्लामी भाई अक़ीक़ा के मआमले में बड़ी बखीली से काम लेते

हैं और कुदरत रखने के बावजुद बच्चों का अक़ीक़ा नही करते जिस से अल्लाह तआला की अता करदा नेअमत की ना क़दरी और सुन्नते रसूल की अदाइगी में कोताही होती है जो बहर हाल एक मुसलमान माँ बाप के लिए मुनासिब नहीं के ये महरूमी का सबब है। लिहाज़ा हमारे इस्लामी भाईयों को चाहिए कि जब उन के घर किसी बच्चा या बच्ची की पैदाईश हो तो अक़ीक़ा जरूर करें अलबत्ता अक़ीक़ा के सिलसिला में ये याद रहे कि बकरा या बकरी की उमर एक साल होना ज़रूरी है और अक़ीक़ा का गौश्त घर के लोगों अजीजों अकारिब मियां फकीर सब खा सकते है अवाम में जो ये मशहूर है कि अक़ीक़ा का गौश्त माँ बाप, दादा, दादी, नाना, नानीं नही खा सकते ये ग़लत है इसका कोई सबूत नही (बहारे शरीयत वगैराह में यही लिखा हैं)

चौथा हक़ :- माँ बाप पर बच्चों का चौथा और बड़ा हक़ ये है कि बच्चे जब किसी क़दर होशियार हो जाएं और बिला तकलीफ बोलने लगें तो माँ बाप उसे इस्लामी आदाब सिखाऐं उमदा तरबियत करें और दीनी तालीम दिलाऐं लाड-प्यार जरूर हो लेकिन ना इतना के बच्चे बिगड़ जाएं ।

हमारे बहुत से इस्लामी भाई इस सिलसिला में इन्तेहाई ला परवाही से काम लेते हैं बचपन में जरूरत से ज्यादा बच्चों को प्यार देते हैं, और उनकी बुरी हरकतों को नज़र अन्दाज करते रहते हैं बच्चा किस किस्म के दोस्तों की सोहबत में रहता है उसकी माँ बाप को परवाह नही होती बच्चों की यही आज़ादी आगे चल कर खुद उन के लिए और माँ बाप के लिए भी नुकसान दा साबित होती है कि जब बच्चा के अन्दर तालीम और तरबियत का फुक़दान होगा और वो बुरी सोहबतों में रहकर बिगड़ चुका होगा तो ज़ाहिर है ना

वो माँ बाप के हुकूक़ अदाकर सकेगा और ना माँ बाप उससे किसी किस्म का दीनी या दुनीयावी फाईदा हासिल कर सकेगें ।

लिहाज़ा इस्लामी भाईयों को चाहिए कि अगर वो अपने बच्चों को बुढ़ापे का सहारा बनाना चाहते हों और उनका मुस्तक़बिल रोशन देखना चाहते हों तो बचपन ही से उनकी उमदा तालीम और तरबियत पर पुरी तवज्जो दें, उनकी मज़मूम हरकतों पर मुनासिब सज़ा दें और बुरी सोहबतों से बचाऐ मज़हबे इस्लाम ने भी बच्चोंकी उमदा तालीम और तरबियत की जानिब माँ बाप को खास तवज्जो देने का हुक्म दिया है इस सिलसिले की चन्द अहादीस यहां दर्ज की जाती है इन्हें पढ़िये और अमल किजिये।

- हज़रते जाबिर बिन सुमरा रदीयल्लाहो अन्हो की रिवायत है रसुलूल्लाह सल्ललल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया कोई शख्स अपने बच्चों को अदब सिखाए तो ये उसके लिए एक साआ सदका करने से अफज़ल है । (तिरमिज़ी जिल्द 2 पेज 16)
- हज़रते अय्युब बिन मूसा अपने बाप से और वो अपने दादा से रिवायत करते है। रसुलूल्लाह सललल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया किसी बाप ने अपने बेटे को अदब सें बहतर अतिया नही दिया। (तिरमिज़ी जिल्द 2 पेज़ 16)
- हज़रते उमर बिन शोएब अपने दादा से रिवायत करते है रसुलूल्लाह सललल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाऐं तो उनको नमाज़ पढने का हुक्म दो और दस साल के हो जाऐं तो उनको नमाज़ पढ़ाओ और उनके सोने की जगह अलैहीदा कर दो । (रियाजुस्सुहालीहीन पेज 151)

इन अहादिस की रोशनी में वाज़ेह हैं कि बच्चों का मुस्तक़बिल ताबनाक बनाने और अपने बुढ़ापे में बच्चों से पुरा-पुरा फाईदा हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को इबतदा ही से

इस्लामी आदाब सिखाऐं और उसके लिए दीनी ताअलीम का बन्दो बस्त करें के उमूमन बच्चों के बिगड़ने का सवब उनकी जहालत ही होती है।

दोरे हाज़िर में आम तोर से यही देखने को मिलता है कि जो लोग अपने बच्चों को जाहिल रखते है या सिर्फ दुनयावी ताअलीम ही दिलाते हैं,वोही लोग बुढ़ापे में अपनी औलाद कि तरफ से तकलीफ देखते हैं और शिकायतें करते फिरते हैं कि हमारा लड़का बहुत वे अदब और ना फरमान है किसी कि बात नहीं मानता ना बड़ो कि इज्ज़त करता है ना छोटों पर शफक़त करता है ! मगर शिकायत करने वाले यह नहीं देखते कि उन्होंने अपने बच्चों का कितना हक़ अदा किया है।

बच्चों का हक़ तो यह था कि उन्हें दीनी ताअलीम दिलाई जाती, अहकामे खुदावन्दी सिखाऐ जाते, अच्छे अखलाक़ का आदी बनाया जाता, रोज़ा नमाज़ की पाबन्दी कराई जाती, ग़लत हरकतों और ग़लत चाल चलन पर पाबन्दी लगाई जाती, यह हुकूक़ तो अदा ना हूऐ महज़ अपने ही हुकूक़ पर नज़र जमी रही जिसका नतीजा यह निकला कि बच्चे आवारागर्दी का शिकार हो चले और माँ बाप के लिये बुढ़ापे का सहारा बनने के बजाऐ दर्दे सर बन कर रह गए, ज़ाहिर है उसमें सिर्फ बच्चों कि खता नहीं है बल्कि माँ बाप भी बड़ी हद तक मुजरिम है, यहां इस सिलसिला की एक रिवायत पढ़िये और इबरत हासिल किजीये।

हज़रत उमर बिन खत्ताब रदीयल्लाहु तआला अन्हु कि बारगाह में एक बाप और बेटे का मुकद्दमा पेश हुआ बाप ने बेटे पर दावा किया कि मेरे हुकूक़ अदा नहीं करता, मेरी इताअत और फरमा बरदारी और इज्ज़त व अहतराम कुछ नहीं करता, हज़रत फारूके

आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने लड़के से जवाब तलब किया, उसने कहा हुजूर ! क्या बाप ही के हुकूक बेटे पर हैं या बेटे का भी कोई हक़ बाप पर है ? आप रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि बेटे के बाप पर चन्द हुकूक़ हैं, एक यह कि शरीफ औरत से निकाह करे कि औलाद अच्छी हों, दुसरा यह कि नाम अच्छा रखे कि उसकि बरकत हो, तीसरा यह कि उसे इल्मे दीन सीखाऐ।

लड़के ने कहा अब इन से पूछा जाऐ कि उन्होनें बाप होकर मेरे क्या हुकूक़ अदा किये हैं ? एक हक तो इन्होने यह अदा किया कि मेरी माँ शरीफ नही वो एक लोन्डी थी जिसे इन्होने चार सौ दिरहम में खरीदा था, दुसरा हक यह अदा किया कि मेरा नाम जुअल (पाखाना का कीड़ा) रखा, तीसरा हक यह अदा किया कि मुझे किताबु-ल्लाह की एक आयत भी नहीं सिखाई ।

यह सुन कर हज़रत फारूके आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु बाप की तरफ मुतवज्जा हुए और फरमाया, तू कहता है कि मेरा बेटा मेरे हुकूक अदा नहीं करता हालांकि उस से पहले तू ने ही उसकी हक़ तलफी कि है और फिर मुकदमा खारिज करते हुऐ उसे दरबारे खिलाफत से बाहर निकल जाने का हुक्म दिया (तनबीहु-लगाफीलीन अर्बि सफा नं. 69)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि औलाद के बिगड़ने में सिर्फ औलाद ही का कसूर नही बल्की औलाद के बिगड़ने की बहुत कुछ जिम्मेदारी माँ बाप के सरजाती हैं, लिहाज़ा हमारे इस्लामी भाईयों को चाहिये कि वो Starting ही से अपने बच्चों की तरबियत पर खास तवज्जो दें और उन्हें दीनी ताअलीम से आरास्ता वे पैरास्ता करें ताकि वो बचपन ही से इस्लामी आदाब के आदी हो जाऐं और मुस्तक़बिल में उनके बिगड़ने का अन्देशा ना रहे-

हमारे बहुत से इस्लामी भाई सिर्फ इसलिये अपनी औलाद को दीनी ताअलीम से दुर रखते हैं कि उन के ख्याल में बच्चा दीनी ताअलीम हासिल करने के बाद दुनिया में ऐश की जिन्दगी नहीं गुज़ार सकेगा, यह बेचारे सोचते हैं कि आठ दस साल तक दीनी ताअलीम हासिल करने के लिये बच्चा पर पैसा खर्च किये जाएें और इस सिलसिले में मुखतलिफ क़िस्म कि परेशानियाँ भी बर्दाशत की जाऐं मगर नतीजा यह निकलता है कि फारिग़ होने के बाद ढाई तीन हज़ार तनख्वाह होगी ज़ाहिर है मुख्तसर सी तनख्वाह में वो ऐश व इशरत की जिन्दगी गुजारने से रहा, उसके बर खिलाफ बच्चे को अगर कोई दुनियावी हुनर सीखा दें या उसे अंग्रेजी ताअलीम दिलाऐं तो Future में वो अच्छी कमाई करके दुनिया की दोलत इक्कठी कर सकता है और माँ बाप की उम्मीदों को भी पुरी कर सकता है,

मगर मेरा ख्याल है बल्कि यही हकीक़त है कि हमारे इस्लामी भाईयों का मज़कूरा ख्याल महज़ एक फरेब और शैतान का धोका है पहली बात तो ये है की हमारे इस्लामी भाईयों को सोचना चाहिये कि वो दुनिया में हमेशा रहने के लिये नहीं आऐ बल्कि दुनिया उनके सफर की मन्ज़िल है जहां से एक दिन कूच करना है और मन्ज़िले मकसूद तो आखरत है जहां हमेशा रहना है और जिसका रास्ता इन्तीहाई दुशवार गुज़ार और कठिन है।

लिहाज़ा दानाई इसमें है कि मन्जिले मकसूद के रास्ते की दुशवारिया दूर की जाएं और वहां के लिए तौशा इकट्ठा किया जाए ये तौशा कुछ तो आदमी के आमाले हस्ना है जो सफरे आखिरत के रास्ते को आसान बनाने में मददगार होगें और कुछ ने क बच्चे हैं जिससे बन्दाए मोबिन को कब्र और हशर में फाएदा पहुंचेगा चुनांचे

हज़रते अबू हुरेरा रदीयल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सललल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया इन्सान जब मर जाता है तो उसका अमल खत्म हो जाता है मगर तीन चीजें बाकी रहती है सदकाऐ जारिया इलमें नाफेअ कि लोग उससे फाएदा उठाऐं नेक बच्चे जो माँ बाप के लिए दुआएें खैर करें (मिशकात शरीफ पेज32)

ज़ाहिर है माँ बाप के इन्तकाल के बाद ज़नाज़ा पढ़ाने के लिए या ईसाले सवाब के लिए वही बच्चे काम आऐंगे जो दीनी उलुम से आरास्ता हो रहे वो बच्चे जो बिलकुल जाहिल है या उन्होने सिर्फ अंग्रेजी तालीम हासिल की है वो चाहे अपने समय का बहुत बड़ा रईस हो या किसी बड़े ओहदे पर फाईज़ हो माँ बाप के मरने के बाद उन्हें कोई खास फायदा ना पहुंचा सकेगा बल्कि अपने बुरे आमाल से और अल्लाह ताअला की ना फरमानी करके क़ब्र में भी माँ बाप को तकलीफ ही पहुचाऐगा ।

दुसरी बात ये है की माँ बाप का ये ख्याल ही सीरे से ग़लत है कि बच्चा मौलवी बन कर मुफलिसी की ज़िन्दगी गुज़ारेगा हां ये सही है कि दोरे हाज़िर में दीनी इदारों में पढ़ाने वाले मुदर्रीसीन और मस्जिद के इमामों की तनख्वाऐं कम होती है लेकिन ये भी एक हक़ीक़त है की दुनिया की दौलत पर सिर्फ जाहीलों या अंग्रेजी दां तबका का कब्जा नही दौलत हो या इज्ज़त अमीरी और ग़रीबी हर एक की गर्दन अल्लाह ताअला के दस्ते कुदरत में है ईस क़ादिरे मुतलक ने दुनिया में आने वाले हर बन्दे का हिस्सा अपनी हिक्मत के तहत मुताअयिन कर दिया है और जब तक बन्दे को उसके मुक़द्दर का हिस्सा दुनिया में नामिल जाऐगा उसे मौत ना आएगी चुनाचे हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रदीयल्लाह अन्हु से रिवायत है कि रसुलूल्लाह सललल्लाहों अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया

बे शक रूहुल कुदुस ने मेरे बातिन में वही की कि कोई जानदार ना मरेगा जब तक अपना रिज़्क पुरा ना करलें ! (जामेउल अहादीस जिल्द 2 सफा 6)

इस रिवायत से मालुम हुआ कि अगर किसी के मुक़द्दर में अमीरी है तो वो मौत से पहले अमीर ज़रूर बनेगा और अगर किसी की किस्मत में महज़ ग़रीबी है तो वो ग़रीबी की हालत में मरेगा दुनिया की कोई ताक़त उसे अमीर नही बना सकती, हां अगर अल्लाह ताअला अपने फज़ल से चाहे तो अमीरी को ग़रीबी से और ग़रीबी को अमीरी से बदल दे इस सिलसिला की एक रिवायत पढ़ीये और सबक हासिल किजिए-

हज़रते सुलेमान अलेहिस्सलाम एक शहर में पहुंचे देखा कि एक बुढ़ा ज़ईफ लकड़ियों का गठा सर पर रखे चला आता है, उस के हाल पर रहम आया उससे नाम दरयाफत फरमाया, उसने जवाब दिया मेरा नाम सुलेमान है हज़रत को ख्याल हुआ कि एक मैं सुलेमान हूं कि तमाम मुल्क ज़ेरे नगी है और एक ये सुलेमान है कि बुढ़ापे मे ऐसी सख्त मुसीबत झेलता है फौरन अपने ताज से एक लाल निकालकर उसके हवाले किया और फरमाया कि इसे ले जा तुझे बल्कि तेरे बच्चों को भी किफायत करेगा, मुनासिब है कि आईन्दा इस मेहनत को छोड़ दे और आराम से जिन्दगी बसर कर उस बुढे शख्स ने लकड़ियों का गटठर वहीं फेंक दिया और लाल लेकर खुशी-खुशी घर की तरफ रवाना हुआ, बार-बार लाल को देखता और हेरान होता कि अल्लाह ताअला ने क्या क़दरो किमत इस सन्गे रेज़ा को अता फरमाई है, अचानक एक चील ने उसको गौश्त समझकर झपटा मारा और लेकर उड़ गई। बुढ़ा बेचारा हाथ मलता रह गया और फिकर मन्द हुआ आज बीवी और बच्चों को क्या खिला!ऊंगा चलो फिर लकड़ियों का गटठर उठाऊं और बेच

कर खाने पीने का इन्तेज़ाम करूं मगर वहां जा कर देखा तो गटठर भी कोई उठा ले गया था। लाचार हो कर रात जंगल मे गुजार दी सुबह सवेरे फिर लकड़िया चुनने लगा इतने में फिर हज़रते सुलेमान अलेहिस्सलाम की सवारी इधर से गुजरी आपने देखा तो सोचने लगे कि ये लालची बुढ़ा अब भी अपने काम और माअमुल की मशक्कत में मसरूफ है । दरयाफत फरमाया तो उसने किस्सा सुनाया हज़रत को फिर रहम आया और एक दुसरा लाल दान किया आज बुढ़े ने बहुत ही हिफाज़त से मुठी बन्द करके घर की राह ली। राह में एक नदी पड़ती थी जिसे पार करके बुढ़ा घर जाया करता था जब वो नदी पार करने लगा तो पानी के बहाव से उसके पांव उखड़ गये और डुबकियां खाने लगा जिस से मुठी खुल गई और मोती हाथ से छुटकर नदी में गिर गया। फिर हसरत व-अफसौस के साथ वापिस आया और लकड़िया चुनने लगा इतिफाक़न फिर हजरत सुलैमान के लश्कर का गुजर हुआ देखा तो वही कम नसीब बुढ़ा लकड़ियो का गठ्ठा लादे चला जा रहा है। फिर बुला कर हाल चाल पुछा। उसने कहानी सुना दी और कहा कि आज तीसरा दिन है ना जाने बीवी और बच्चों पर क्या गुज़र रही होगी हज़रत को फिर रहम आ गया और एक और मोती जो बहुत ही मंहगा था उसे दान कर दिया इस बार बुड़े ने मोती को बड़ी मज़बूती के साथ पगड़ी में बांधा और घर की राह ली अभी थोड़ी दुर चला था के एक सवार नमूदार हुआ और उस ने बुढ़े की पगड़ी में चमकता हुआ लाल देख कर घोड़ा करीब कर लिया और फिर अचानक पगड़ी छीन कर भागा बुढ़ा रोता हुआ हज़रत्ते सुलेमान अलेहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर हुआ और कहने लगा ऐ पेगम्बरे खुदा अल्लाह ताअला ने जो कुछ मेरे नसीब में लिखा था में उसी पर राजो था आपने चाहा के मुझे

ग़रीबी से निजात मिले सो ये खुदा को मन्जुर ना था आपके चाहने से में अमीर तो ना बना अलबत्ता मुझे और मेरे बाल बच्चों को तीन दिन फाक़ा कशी करनी पड़ी हज़रत ने फरमाया सुलेमान क्या करें जब खुदा ही ना चाहे-

गर्ज़ के बुढढा फिर हस्बे दस्तूर लकड़ियां चुन चुनकर अपने घर को पालने लगा कुछ दिनों के बाद फिर एक मर्तबा हज़रते सुलेमान अलेहिस्सलाम अपने लश्कर के साथ उस लकड़ हारे की बस्ती के पास गुज़रे आपने आदमी भेजकर उसको तलब फरमाया उसने जवाब दिया के अब तो बगैर सवारी के एक कदम भी नही चल सकता हज़रत को तअज्जुब हुआ सवारी भेज कर बुलाया और हाल दरयाफत फरमाया बढढे ने अर्ज़ कि के जब आपके दिऐ हुऐ लाल गुम हो गऐ और मेरी आस टूट गयी तो मैंने बे इख्तियार खुदा वन्दे करीम की बारगाह में गिरीया वज़ारी शुरूअ की के खुदाया तेरे नबी ने कोशिश की मगर तूने ना चाहा तो कुछ भी फाएदा ना हुआ अब सिवा तेरे किसी का आसरा नही तूं ही अपने खजानाऐ ग़ेब से वोह खोए हुए लाल इनायत फरमा इत्तेफाकन एक दिन हमेशा की तरह लकड़िया तोड़ने पेड़ पर चढ़ा वहां चील का घोसला था देखा तो वहीं तीनों लाल रखे हुए थे उनको पाकर में बहुत बड़ा अमीर बन गया (किसासुल औलिया सफा नं. 222)

इस रिवायत से ये माअलुम हुआ के अमीरी और गरीबी का मदार दुनिया के वसाईल पर नही सिर्फ अल्लाह ताअला के फजल पर है जिसे जब चाहे इज्जत व दौलत अता करे और जिसे जब चाहे जिल्लत व गुरबत में डाले उसकी इजाज़त के बगैरएक तिनका भी हिल नही सकता इसलिए किसी का ये सोचना के वोह दुनियावी ताअलिम हासिल करके या दुनियावी हुनर हासिल करके अमीर

कबीर बन जाऐगा उसकी हिमाक़त के सिवा कुछ नही। मिलेगा वही जो मुक़द्दर में होगा अल्लाह ताअला अता करने पर आऐ तो बे हुनर व बे अक्ल को बेहिसाब अता करे और रोज़ी का वोह दरवाजा खोले जिस का वहम व गुमान भी ना हो और ना देना चाहे तो हुनर मन्द इन्तहाई अक्लमन्द व ताअलिम याफ्ता लोग भी फाक़ा कशी पर मजबूर हो जाऐं कितने ऐसे पी.एच.डी. करने वाले हैं जो दर दर की ठोकरे खा रहे हैं और कितने ऐसे जाहिल है जो दस्तखत करना भी नही जानते मगर जिन्दगी नवाबो जैसी गुजारते हैं ।

लिहाज़ा हमारे इस्लामी भाईयों को चाहिए के वोह तकदीर पर पूरा भरोसा रखें और दौलते दुनियां की लालच में अपने बच्चों को सिर्फ दुनिया वाली ताअलिम दिला कर अपने लिए दर्दे सर ना पैदा करें बल्के उन्हे आलीमे दीन बनाए या कम से कम दुनियावी ताअलिम के साथ टीवशन के जरिऐ अपने बच्चों की दीनी ताअलिम का भी बन्दोबस्त करें ताके वोह हलाल व हराम, जाईज़ो नाजाईज़ और अच्छे बुरे में फर्क़ कर सके और माँ बाप ये यकीन रखें के बच्चे की क़िस्मत में अगर दुनिया की दौलत है तो वोह हर हाल में मिलेगी और अगर किस्मत में गरीबी है तो दुनिया की कोई ताक़त अमीर नहीं बना सकेगी बस हिस्सा के मुताबिक़ ही रोजी मिलेगी ।

पाँचवा हक़ः- माँ बाप पर बच्चों का एक अहम हक़ ये भी है के बच्चे जब शादी के लायक़ हो जाऐ तो इन्तेहाई जांच पड़ताल के बाद बा इज्ज़त घराने में शादी करें लड़का की शादी ताअलिम याफ्ता दीनदार और सेहत मन्द लड़की के हमराह करे इसी तरह लड़की का निकाह शरीफ खानदान शरीफ तबीअत ताअलिम याफ्ता सेहतमन्द सुन्नी सहीहूल अक़ीदा नौ जवान के साथ करे और खबरदार-खबरदार किसी बद अकीदा मस्लन वहाबी, देव बन्दीत्र,

राफज़ी, नेचरी वगैरह के हमराह अपनी औलाद का निकाह न करें के ये अहले सुन्नत के लिए किसी तरह जाईज नहीं बल्के वद अक़ीदा और बददीन लोगों से ऐसे परहेज़ करे जैसे खिन्ज़ीर से करता है बल्के उससे भी ज़्यादा के खिन्ज़ीर से कोई जानी व ईमानी नुक़सान नहीं मगर बद मज़हबों से ईमान ज़ाऐ होने का सख्त खतरा है-

हमारे बहुत से इस्लामी भाई इस सिलसिला में बड़ी लापरवाही करते हैं वहाबियो और देवबन्दियों से रिश्ता क़ायम करने में कोई खराबी नहीं समझते हालांकि ये दोनों फिरक़े ईमान के लिए ज़हरे कातिल से कम नहीं ये खुद गुमराह होते हैं और उनकी सोहबत रिश्तेदारों को भी गुमराह बना देती है लिहाज़ा मुसलमानों को बद अक़ीदा लोगों से रिश्ता क़ायम करने से बचने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और शादी विवाह जब भी करे चन्द वातों का खास ख्याल रखें ।

पहली बात:- लड़का की शादी ज़लीलो खार और नीचे तबके के बदनाम कोम में न करें क्योके जो बच्चा पैदा होता है उसमें ननिहाल वालों का भी असर होता है जैसा के हज़रते आयशा सिद्दीकी रदीयल्लाहो अन्हा फरमाती हैं।

के रसुलूल्लाह सललल्लाहो अलेहि वसल्लम ने फरमाया अपने नुतफा के साथ भलाई करो क्योंके औरतें अपने भाईयों और बहनों के मुशाबे पैदा करती है- (तरीकतुल मुत्तकीन जिल्द दोम सफाह 260)

दुसरी बात ! औलाद की शादी उनकी पसन्द के मुताबिक करें के उमुमन मियां बिवी और बाप बेटे में इख्तलाफ का एक सबब ये भी होता है के बच्चों की शादी उनके मिज़ाज के खिलाफ वालिदेन महज़ अपनी सवाब दीद के मुताबिक कर देते हैं, नतीजन घर का

माहोल बनने के बजाऐ और बिगड़ जाता है आए दिन मारपीट झगड़ा लड़ाई और इख्तलाफों इन्तशार का माहौल बना रहता है और बसा औक़ात तलाकों इफतकार तक की नौबत पहुंच जाती है- इसी लिए शरीअत मुताहरा ने शादी के सिलसिला में पसन्द को बडा दखल दिया है- दो हदीसें यहा दर्ज़ की जाती है ।

(1)रसुलूल्लाह सललल्लाहो अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं जब तुम में से कोई किसी औरत को निकाह का पैग़ाम दे तो अगर वो अपनी मंगेतर को देखने की कुदरत रखता हो तो चाहिए के देखे (मिशकात जिल्द दोम सफाह नं. 268)

(2) हज़रते अबू हुरेरा रदियल्लाहो तआला अन्हु की रिवायत है एक शख्स नबीए करीम अलेहिस्सल्लाम की बारगाह मे हाज़िर हुए अर्ज़ की के मैंने अन्सार की एक औरत से निकाह किया है हुजूर ने फरमाया उसे देख ले क्योकि अन्सार की आखों में कुछ होता है मौजुदा ज़माने में बहुत से इस्लामी भाई शादी से पहले मंगेतर को देखना दिखाना पसन्द नही करते बल्केउसे एक ऐब तसव्वुर करते हैं जिसके बुरे असरात आज किसी से पोशीदा नहीं ।

छठा हक़ः - वालिदेन पर औलाद का एक ये भी हक़ है के अगर चन्द बच्चे हो तो सबके साथ अदलो इन्साफ का बरताओ करें किसी को किसी पर तरजीह न दें वरना वालिदेन की तरफ से औलाद के दिलों में कुदुरत पैदा हो जाऐगी और भाईयों के दरमयान एक दूसरे से हस्द पैदा हो जाऐगा इसीलिए हुजूर अलेहिस्सल्लाम ने उम्मत को औलाद के दरमयान अदल करने की ताक़ीद फरमाई हुजूर सललल्लाहो अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं औलाद का तुम्हारे ऊपर ये हक़ है के तुम उनके दरमयान अदल करो (अबू दाऊद जिल्द दोम सफाह नं. 51)

लिहाज़ा हर मुस्लमान भाई को चाहिए के औलाद के दरमीयान बहरहाल अदलो इन्साफ करता रहे ताके उनके दरमियान भाई-चारगी का माहौल बना रहे।

यहां तक के वालिदेन पर औलाद के सात अहम हुकूक ज़िक्र किऐ गऐ जिससे किसी हाल में भी सरफे नजर नही किया जा सकता इन मज़कूरा हुकूक़ के अलावा भी औलाद के चन्द हुकूक़ हैं जिन पर तकरीबन हर माँ बाप का अमल रहता ही है इसलिए उनके ज़िक्र की जरूरत नहीं।

वालिदेन पर बेटी के खास हुकूक:- मौजूदा दौर में हमारे बहुत से इस्लामी भाई लड़कियो की पैदाईश को बेहतर नही समझते बल्के उसे अपने लिए एक ज़हमत, वबाले जान तसव्वुर करते हैं हालाकें लड़कियां वालिदेन के हक में किसी बड़ी नअमत से कम नहीं बसीरत के लिए खास लड़कियों से मुतअलिक़ चन्द अहादिस हसबे ज़ेल हैं।

उम्मुलमोमीनीन हज़रते आयशा सिद्दीका रदीयल्लाहु अन्हु फरमाती हैं के मेरे पास एक औरत आई उसके साथ दो लडकिया थी उसने मुझसे सवाल किया मेरे पास सिवाए एक खजूर के और कुछ नहीं था मैंने वहीं उसे दे दिया उस औरत ने खजूर दो हिस्सों में करके दोनों लड़कियों में तक्सीम कर दिया फिर खड़ी हुई और चली गई तो जब नबीए करीम अलेहिस्सलाम तशरीफ लाए तो मैंने वाक्या ज़िक्र किया हुजूर ने फरमाया जो शख्स इन लड़कीयों के जरिए कुछ भी आजमाईश में डाला गया और उनके साथ अच्छा सलूक किया तो ये लड़किया उसके लिए दोज़ख से आड़ बन जाएंगी। (बुखारी शारीफ जिल्द दोम सफाह नं. 887)

हज़रते अनस बिन मालिक रदीयल्लाहु अन्हु फरमाते हैं

जिसने दो लड़कियों की परवरिश की यहां तक के वो बालिग हो गई तो क़यामत के दिन वो उस हाल में आऐगा के हम और वो ऐसे होंगे हुजूर ने अपनी उंगलियों को मिलाकर फरमाया (मुस्लिम जिल्द दोम सफाह नं. 330)

हज़रते अबू सईद खुदरी रदीयल्लाहु तआलाअन्हु फरमाते है हुजूर सल्लल्लाहू अलेहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने तीन लड़कियों की परवरिश की उन्हें अच्छे आदाब सिखाऐ और उनकी शादी कर दी और उनके साथ अच्छा बरताओ किया तो उसके लिए जन्नत है (अबू दाऊद जिल्द दोम सफाह नं. 701)

मज़कूरा अहादीस में वाज़ेह है के लड़कियां अल्लाह तआला की जानिब से अपने वालिदेन के लिए रहमतो नअमत है लिहाज़ा इस्लामी भाईयों को चाहिए के उनके हुकूक़ की अदायगी में किसी किस्म की कोताही न बरतें वरना आखिरत में सख्त गिरफत होगी खास लड़कियों के हुकूक़ यहां ज़िक्र किऐ जाते हैं।

पहला हक़:- यूं तो जो हुकूक़ लड़को के है तकरीबन वही तमामी हुकुक लड़कियों के भी हैं यहां चन्द तरजीही हुकूकं का ज़िक्र है जिन में लड़की का पहला हक़ ये है माअमलात में लड़कों पर लड़कियों को तरज़ीह देना चाहिए मसलन अगर कोई खाने पीने की चीज़ तकसीम करते वक्त लड़का और लड़की दोनों मौजूद हों तो पहले लड़की को दें फिर लड़के को दें, क्योंके लड़कियो का दिल शिशे की मान्दि इन्तिहाई नाजूक होता है और ज़रा सी ठेस भी उसे तोड़ने के लिए काफी होती है, इसी लिए लड़कियों पर लड़कों को तरज़ीह ना देने का हुक्म अहादीस में भी आया है-

हुजूर सल्लाहु अलेहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं। जिस शख्स के पास लड़की हो और वो उसे जिन्दा दफन ना करे ना

उसको हकीर जाने और ना लड़के को इस पर तरजीह दें तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाखिल फरमायेगा (मिशकात जिल्द दोम सफाह नं. 423)

दूसरा हक़:- लड़की का निकाह शरीफ खानदान शरीफ तबीयत ताअलीम याफताह, सुन्नीसहीहुल अकीदाह दीनदार नौ जवान के साथ करें और खबरदार-खबरदार किसी वहाबी, देव बन्दी या किसी बदअकीदाह के हमराह मसलन वहाबीयो, देव बन्दीयों, राफज़ियों, निचरीयों, वगैरह, बद दीनों के साथ रिश्ताऐ निकाह क़ाईम करना अहले सुन्नत के लिए हरगिज़ जाईज़ नही (अनवारूल हदीस, सफाह नं. 329)

हमारे बहुत से इस्लामी भाई इस सिलसिला में बड़ी लापरवाही से काम लेते हैं वहाबीयों और देवबन्दीयो से रिश्ता कायम करने में कोई क़बाहत नहीं समझते हालाकें वहाबियत और देवबन्दीयत अहले ईमान के लिए ज़हरे क़ातिल से कम नही लिहाज़ा हमारे इस्लामी भाईयो को इससे बचने की कोशिश करनी चाहिए

तीसरा हक़:- बेटी का तीसरा अहम तरीन हक़ हक़े विरासत है दोरे हाज़िर में आमतौर पे मुस्लमान अपनी बेटियों को विरासत के हक से महरूम रखते हैं गौया लोगों का ये ज़हन बन चुका है के बेटी की शादी करके उसे रूखसत कर दिया तो उसके हक से आज़ाद हो गए और विरासत का सारा सरमाया लड़को को मिलता है, हालांके शरई तौर पे विरासत मे बेटे के साथ बेटी का भी हक़ होता है जिससे सरफे नजर करना और बेटी को विरासत से बिल्कुल महरूम कर देना बड़ा गुनाह और बेटी की हक़ तलफी है लिहाज़ा जब तक बेटी को उसका हक़ ना दिया जाए उस वक़्त तक वालिदेन उसके हक से आज़ाद नहीं हो सकते इसलिए जिन लोगों को ये खौफ

हो के उनके मरने के बाद उनके लड़के अपनी बहनों को हिस्सा नहीं देंगे उन पर लाज़िम है के अपनी जिन्दगी में ही शरीयत के मुताबिक़ लड़कियों को उनका हिस्सा देदें या कम सेकम लड़कियों के लिए विरासत की वसीयत कर दें ताके आखिरत में उसके बारे में पूछ ताछ ना हो-

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

ऐलान

हज़रते मुसन्निफ की दुसरी तसनीफ ''शोहर और बीवी के हुकूक़'' जल्द ही मनज़रे आम पर आ रही हैं जिसमे ये बताया गया है की शोहर को बीवी के साथ और बीवी को शोहर के साथ कैसा सुलूक़ करना चाहिए की उनकी ज़िन्दगी खुशगवार गुज़रे और ये भी बताया गया है की शोहर और बीवी मे से हर एक पर दुसरे के इस्लामी हुकूक़ है जिनकी रियायत पुर अमन जिन्दगी गुज़ारने के लिए जरूरी है अगर मुस्लमान मर्द और मुस्लमान औरतें इस किताब को पढ़कर उस पर अम्ल कर लें तो इन्शा अल्लाह तआला उनका घर जन्नत निशान बन जाऐगा।

नोट :- किताब में एटवाटाईज़ देने के लिए इस नम्बर पर सम्पर्क करें मो. 9414433055

वहीदी क्लिनिक

सेरूना, श्री डुंगरगढ़ (बीकानेर)

मो. 9799281786

-: कम्पाउण्डर :-

मोहम्मद इरफान हुसैन वहीदी